بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 27
Issue - 05

राह-ए-ईमान

मई
2025 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी........................ 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत)..4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 02-05-2025)..8
7. ख़िलाफ़त ए अहमदिया: विश्व शांति के प्रयास में अग्रसर........................ 12
8. हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अ० की मुबारक तहरीकें........................15
9. ख़िलाफ़त और हमारी ज़िम्मेदारियाँ (हमारा दायित्व)........................24

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य
****
उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
खान मामून अहमद
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

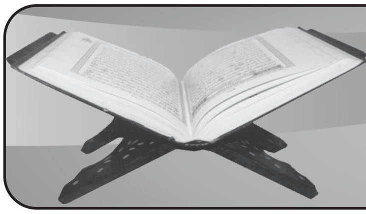

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवादः- 152- तू उन से कह दे कि आओ ! जो तुम्हारे रब्ब ने तुम्हारे लिए हराम ठहराया है वह मैं तुम्हें पढ़ कर सुनाऊँ। (उस का आदेश है) कि तुम उस का कोई साझी न बनाओ तथा माता-पिता से नेकी (परोपकार) करो और ग़रीब हो जाने के डर से अपनी सन्तान की हत्या न करो। हम तुम्हें भी आजीविका (रोज़ी) देते हैं और उन्हें भी। और बुराइयों के निकट भी न जाओ न उनमें से ज़ाहिर (बुराइयों के) न छुपी (बुराइयों) के और यह कि उस जान को जिस की हत्या से अल्लाह ने रोका है (शरीअत या विधान की) आज्ञा के बिना हत्या न करो। इस बात की अल्लाह तुम्हें ताकीद करता है ताकि तुम पापों से बचो।

153-और यह कि तुम यतीम के धन को उस के युवावस्था तक पहुँचने से पहले बेईमानी से मत खाओ तथा नाप-तौल न्याय के साथ (पूरे-पूरे) दो। हम किसी व्यक्ति को उस की शक्ति से बढ़कर आदेश नहीं देते और जब तुम कोई बात कहो तो न्याय से काम लो, चाहे वह बात अपने निकट सम्बन्धी के बारे में ही हो और अल्लाह के साथ किए गए वादे को भी पूरा करो। वह इस बात की तुम्हें इसलिए ताकीद करता है ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो। (सूरह अल् अनाम- 152-153)

अनुवादः हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक जुमा के ख़ुत्बा में फरमाया- हे मुसलमानों इस दिन को अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए ईद बनाया है इस दिन नहाया करो और मिसवाक (दातुन) ज़रूर करो। (अर्थात इस दिन नहा धोकर साफ सुथरे होकर, अच्छे कपड़े पहन कर ईद की सी ख़ुशी मनाओ और अल्लाह तआला की इबादत के लिए एक जगह इकट्ठे हो। (अलमुअजम अस्सग़ीर अत्तिबरानी)

अनुवादः हज़रत आमिर बिन लुदैन अशअरी वर्णन करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि शुक्रवार का दिन तुम्हारे लिए ईद का दिन है। इसलिए केवल इस दिन को विशेष कर के रोज़ा न रखा करो, सिवाय इसके कि शुक्रवार के साथ उसके पहले या बाद का दिन मिला लो (अर्थात गुरुवार और शुक्रवार या शुक्र और शनि दो दिन मिलाकर रोज़ा रखो) (अत्तरग़ीब वत्तरहीब जिल्द 2 पृष्ठ 250)

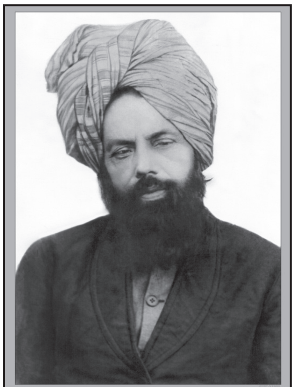
Hadhrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
The Promised Messiah

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

भविष्यवाणी और शुभसूचनाओं के अनुसार ख़ुदा तआला ने यह सिलसिला क़ायम किया है

अब कोई हमारे दावे को छोड़े और अलग रहने दे, मगर इन बातों का सोचकर जवाब दे। मुझे झुठलाओगे तो तुम्हें इस्लाम से हाथ धोना पड़ेगा। मैं सच कहता हूँ कि क़ुर्आन शरीफ़ के वादा के अनुसार अल्लाह तआला ने अपने दीन की हिफ़ाज़त की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पेशगोई पूरी हुई। क्योंकि ठीक आवश्यकता के समय ख़ुदा तआला ने अपने वादा के अनुसार और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पेशगोई के अनुसार यह सिलसिला क़ायम किया और यह सिद्ध हो गया कि अल्लाह तआला और उसके रसूल की बातें सच्ची हैं। झूठा और अन्यायी है वह इन्सान, जो इन बातों को झुठलाता है।

(अल-हकम् जिल्द-7 अंक1 दिनांक 10 जनवरी सन् 1903 ई. पृ. 3,4)

अल्लाह तआला ने मुझे अवतरित किया है

अब मेरा यह दावा कि मैं इस सदी पर दीन (धर्म) के सुधार के लिए भेजा गया हूँ खुला-खुला है। मैं पूरे विश्वास से घोषणापूर्वक कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने मुझे अवतरित किया है और अब तक इस दावा पर बाईस वर्ष से अधिक का समय बीत गया है। इतने समय तक मेरी सहायता और समर्थनों का होना यह तुम पर अल्लाह तआला की ओर से आरोप और अकाट्य तर्क है। क्योंकि मैंने जो मुजद्दिद होने का दावा किया है कि मैं उपद्रवों को दूर करने के लिए भेजा गया हूँ, यह हदीस और क़ुर्आन के आधार पर किया है। अब जो लोग मुझे झुठलाएँगे वे मुझे नहीं अल्लाह और उसके रसूल को झुठलाएँगे। उनको उस समय तक झुठलाने का कोई हक़ नहीं बनता जब तक वे मेरी जगह कोई दूसरा मुजद्दिद (सुधारक) न प्रस्तुत करें। क्योंकि समय और परिस्थितियाँ बताती हैं कि कोई मुजद्दिद (सुधारक) आना चाहिए। क्योंकि हर जगह उपद्रवी पैदा हो चुके हैं और क़ुर्आन शरीफ़ कहता है कि ऐसे अंधकारों के समय क़ुर्आन की रक्षा के लिए मुजद्दिद (सुधारक) आता है और हदीस कहती है कि हर सदी के प्रारम्भिककाल में मुजद्दिद भेजा जाता है। फिर आवश्यकताएँ मौजूद हैं और हिफ़ाज़त एवं धार्मिक सुधार के यह वादे अलग हैं, तो इन आवश्यकताओं और वादों के अनुसार आने वाले को झुठलाया तो दो ही दशाएँ हैं या तो कोई दूसरा मुजद्दिद (सुधारक) प्रस्तुत किया जाए या उन वादों को झुठलाया जाए।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

मौलवी रुसुल बाबा साहिब अमृतसरी की पुस्तक हयातुल मसीह पर एक और दृष्टि तथा एक हज़ार रुपए इनामी जमा कराने के लिए निवेदन

उन्हें अधिकार होगा कि सब सामूहिक तौर पर पुस्तक बना दें। संभवत: इस प्रकार से उनको आसानी होगी, परन्तु उनके लिए अन्तिम परिणाम यही होगा कि خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ وَسَوَادُ الْوَجْهِ فِي الدَّارَيْنِ और यदि हम उनका यह निवेदन आने के पश्चात् जिस पर कम से कम दस प्रसिद्ध रईसों की गवाहियां अंकित होनी चाहिए और जो किसी अख़बार में छापकर हमारे पास रजिस्ट्री द्वारा पहुंचानी चाहिए, तीन सप्ताह तक किसी बैंक में पांच हज़ार रुपए जमा न कराएं तो हम झूठे और हमारा सारा दावा झूठा समझा जाएगा, क्योंकि मौखिक इनाम देने का दावा कुछ चीज़ नहीं। एक झूठा बुरी नियत रखने वाला भी ऐसा कर सकता है। सच्चा वही है कि जो उसकी जीभ से निकले कर दिखाए अन्यथा झूठों पर ख़ुदा की लानत। किन्तु यदि हमने रुपया जमा करा दिया और फिर कपट पेशा लोग मुक़ाबले पर आने से भाग गए तो इस वचन भंग करने के कारण जो कुछ खर्च हम पर पड़ेगा वह सब सीधे तौर पर या अदालत द्वारा उनसे लिया जाएगा तथा इस स्थिति में भी जब कि वे उत्तर लिखने में दायित्व पूरा न कर सकें तो इस का इक़रार भी उनके निवेदन में होना चाहिए।

अब हम मौलवी रुसुल बाबा के हज़ार रुपए इनाम का वर्णन करते हैं। हम वर्णन कर चुके हैं कि मौलवी रुसुल बाबा साहिब ने अपनी पुस्तक 'हयातुलमसीह' को हज़ार रुपए इनाम की शर्त से प्रकाशित किया है कि जो व्यक्ति उनके तर्कों का खण्डन कर दे उसे हज़ार रुपया इनाम दिया जाए। परन्तु कथित मौलवी साहिब ने इसी पुस्तक में यह भी वर्णन कर दिया है कि कथित पुस्तक में वे तर्क एक मुअम्मा या पहेली की तरह गुप्त रखे गए हैं, वे किसी को मालूम ही नहीं हो सकते जब तक कोई उन्हीं से उस पुस्तक को एक-एक पाठ करके न पढ़े। बुद्धिमान को ज्ञात हो गया होगा कि ये बातें किस भय ने उनके मुंह से निकलवाई हैं और दिल में कौन सा धड़का था जिससे इन छल-कपटों की आवश्यकता हुई। हम तो इन बातों के सुनते ही डाइन के अढाई अक्षर (चुड़ैल की करतूत) मालूम कर गए और समझ गए कि किस दर्द से यह मातम किया गया है तथा किस भय से तर्कों का हवाला अपने पेट की ओर दिया गया है।

बहरहाल हम उनको इस पुस्तक द्वारा अवगत करते हैं कि वे जून 1894 ई. के अन्त तक हज़ार रुपए ख्वाजा यूसुफ शाह साहिब और शेख़ ग़ुलाम हुसैन साहिब और मीर महमूद शाह के पास अर्थात् तीनों की सहमति के साथ जमा करा के उनके हस्तलिखित पत्र के साथ हमें सूचित करें जिसमें उनका यह इक़रार हो कि हमने हज़ार रुपया वसूल कर लिया और हम इक़रार करते हैं कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अर्थात् इस

लेखक के विजयी सिद्ध होने के समय यह हज़ार रुपया हम अविलम्ब कथित मिर्ज़ा को दे देंगे और रुसुल बाबा का इससे कुछ संबंध न होगा। इस पत्र की इसलिए आवश्यकता है ताकि हमें पूर्णतया सन्तोष हो जाए और समझ लें कि रुपया मध्यस्थों के क़ब्ज़े में आ गया है और ताकि हम इसके बाद मौलवी रुसुल बाबा की पुस्तक के उन्मूलन के लिए व्यस्त हो जाएं और हम बात को संक्षिप्त करने के लिए इस बात पर सहमत हैं कि **शेख़ मुहम्मद हुसैन बत्तालवी** या ऐसा ही कोई ज़हरीला माद्द: रखने वाला फैसला करने के लिए नियुक्त हो जाए। फैसले के लिए यही पर्याप्त होगा कि शेख़ मुहम्मद बत्तालवी मौलवी रुसुल बाबा साहिब की पुस्तक को पढ़कर और इसी प्रकार हमारी पुस्तक को आदि से अन्त तक देख कर एक सार्वजनिक जल्से में क़सम खा जाएं और क़सम की इबारत यह हो कि हे दर्शकगण! ख़ुदा की क़सम मैंने प्रारंभ से अन्त तक दोनों पुस्तकों को देखा और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि वास्तव में मौलवी रुसुल बाबा साहिब की पुस्तक निश्चित और अटल तौर पर हज़रत ईसा का जीवित रहना सिद्ध करती है और जो विरोधी की पुस्तक निकली है उसके उत्तरों से उसके तर्कों का उन्मूलन नहीं हुआ। यदि मैंने झूठ कहा है या मेरे दिल में उसके विरुद्ध कोई बात है तो मैं दुआ करता हूँ कि मुझे एक वर्ष के अन्दर कोढ़ हो जाए या अंधा हो जाऊँ या किसी अन्य बुरे अज़ाब से मर जाऊँ। बस। तब समस्त दर्शकगण तीन बार ऊँची आवाज़ से कहें कि आमीन, आमीन, आमीन और जल्सा समाप्त हो।

फिर यदि एक वर्ष तक वह क़सम खाने वाला इन विपत्तियों से सुरक्षित रहा तो नियुक्त कमेटी मौलवी रुसुल बाबा का हज़ार रुपया सम्मान पूर्वक उसे वापस दे देगी। तब हम भी इक़रार प्रकाशित करेंगे कि वास्तव में मौलवी रुसुल बाबा ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का जीवित रहना सिद्ध कर दिया है। परन्तु एक वर्ष तक बहरहाल वह रुपया नियुक्त की गई कमेटी के पास जमा रहेगा और यदि मौलवी रुसुल बाबा साहिब ने इस पुस्तक के प्रकाशित होने से दो सप्ताह तक हज़ार रुपया जमा न करा दिया तो उनका झूठ सिद्ध हो जाएगा। तब प्रत्येक को चाहिए ऐसे झूठ बोलने वाले लोगों की बुराई से ख़ुदा तआला की शरण मांगें और उन से अलग रहें। स्पष्ट रहे कि इस विरोधी गिरोह से हमें सामान्य तौर पर कष्ट पहुंचा है और कोई तिरस्कार तथा अपमान और गाली-गलौच नहीं जो उन से प्रकट नहीं हुआ। जब काफ़िर कहने तथा गालियों से कोई हानि न पहुंचा सके तो फिर बद्-दुआओं की ओर ध्यान दिया और दिन-रात बद्-दुआएं करने लगे। परन्तु ऐसे कंजूसों और बेरहमों की अत्याचार पूर्ण बद्-दुआएं उसके दरबार में क्यों कर स्वीकार हों जो दिलों की गुप्त हालतों को जानता है। अन्तत: जब बद्-दुआओं से भी काम न निकल सका तो ख़ुदा तआला से निराश होकर अंग्रेज़ी सरकार की ओर झुके और झूठी जासूसियाँ की तथा मनगढ़त पुस्तकें लिखी कि इस व्यक्ति के अस्तित्व से फ़साद की आशंका और जिहाद का भय है। परन्तु यह दक्ष, कुशाग्र बुद्धि तथा वास्तविकता को पहचानने वाली सरकार इतनी नासमझ नहीं थी कि इन चालाक ईर्ष्यालुओं के धोखे में आ जाती।

(शेष.....)

(पुस्तक: इत्मामुल हुज्जत पृष्ठ 74-77)

सम्पादकीय

विश्व युद्ध और शांति प्रयास

अहमदिया मुस्लिम जमाअत (समुदाय) विश्व स्तर पर शांति और आपसी भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। जमाअत "प्रेम सभी के लिए, घृणा किसी से नहीं" के सिद्धांत में विश्वास करती है और विभिन्न पहलुओं के माध्यम से शांति स्थापित करने की दिशा में सक्रिय रूप से काम कर रही है, जिसमें शांति संगोष्ठी आयोजित करना, अंतर-धार्मिक संवाद को बढ़ावा देना और मानवाधिकारों की वकालत करना शामिल है।

वैश्विक शांति अभियान के तहत अहमदिया मुस्लिम जमाअत नियमित रूप से #STOPWW3 और "शांति के लिए आवाज़ें" जैसे वैश्विक अभियान आयोजित करती आ रही है, जो संघर्षों को समाप्त करने और शांति को बढ़ावा देने पर केंद्रित होते हैं। जमाअत शांति की प्रगति में योगदान देने वाले व्यक्तियों और संगठनों को मान्यता देने के लिए अहमदिया मुस्लिम शांति पुरस्कार भी प्रदान करती है।

जमात अहमदिया के विश्व प्रमुख हजरत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्निहिल अज़ीज़ ने अपनी पुस्तक "विश्व संकट तथा शांति पथ" में विश्व शक्तियों को बार बार इस संघर्ष और युद्ध से बचने और दुनिया में शांति बनाए रखने सुनहरे सिद्धांत बताए हैं आप लिखते हैं :

"मैं आप सब से निवेदन करता हूं कि अपनी उत्तम योग्यताओं के अनुसार शान्ति के लिए प्रयास करें ताकि हम आशाओं के इस दीपक को प्रकाशित रख सकें कि एक समय अवश्य आएगा कि जब वास्तविक शान्ति और न्याय विश्व के समस्त देशों में स्थापित हो जाएगा।

हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जब मानव प्रयास विफल हो जाते हैं तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर मानवजाति के भाग्य को निश्चित करने के लिए अपने निर्णय को जारी करता है। इससे पूर्व कि परमेश्वर का निर्णय जारी हो और वह लोगों को उसकी ओर जाने तथा मानव जाति के अधिकारों को अदा करने पर विवश करे यह उचित होगा कि विश्व के लोग स्वयं इन महत्त्वपूर्ण मामलों की ओर ध्यान दें, क्योंकि परमेश्वर को कार्यवाही करने पर विवश किया जाता है तब उस का क्रोध वास्तव में मनुष्य को एक कठोर और भयानक ढंग से पकड़ता है।

वर्तमान संसार में परमेश्वर के निर्णय का एक भयानक प्रकटन एक अन्य विश्व-युद्ध के रूप में हो सकता है। इसमें कदापि सन्देह नहीं कि ऐसे युद्ध के प्रभाव तथा उस के द्वारा विनाश केवल उस युद्ध तक या केवल वर्तमान पीढ़ी तक सीमित नहीं होंगे अपितु उसके भयानक परिणाम कई भावी पीढ़ियों तक असरअंदाज़ होंगे। ऐसे युद्ध के इन भयानक परिणामों में से एक यह है कि इन युद्धों का प्रभाव नवजात शिशुओं पर तथा भविष्य में जन्म लेने वाले बच्चों पर भी पड़ेगा। आधुनिक शस्त्र इतने विनाशकारी हैं कि भविष्य में जन्म लेने वाली कई पीढ़ियों पर उनके भयानक आनुवांशिक और शारीरिक प्रभाव पड़ेंगे।

जापान ही एक ऐसा देश है जिसने एटमी युद्ध के नितान्त भयानक परिणाम देखे हैं उस पर द्वितीय विश्व-युद्ध के बीच एटम बम से आक्रमण किया गया। आज भी यदि आप जापान जाएं और वहां के लोगों से मिलें तो आप उस युद्ध का एक पूर्ण भय और उसकी घृणा उनकी आंखों में देखेंगे और जो कुछ वे कहते हैं उससे भी प्रकट होता है। हालांकि वह एटम बम जो उस समय प्रयोग किए गए तथा जिन्होंने बहुत अधिक विनाश किया वे आज के परमाणु शस्त्रों की अपेक्षा जो कि आज छोटे-छोटे देशों के पास भी हैं, बहुत कम शक्तिशाली थे।

कहा जाता है कि जापान में यद्यपि कि सात दशक गुज़र चुके हैं तथापि एटम बम के प्रभाव नवजात शिशुओं पर अब भी प्रकट हो रहे हैं। यदि किसी व्यक्ति को गोली मारी गई हो तब भी प्राय: उपचार के द्वारा उसका बच जाना संभव होता है परन्तु यदि रासायनिक युद्ध आरंभ हो जाता है तो जो भी उसकी लपेट में आएंगे उनका ऐसा भाग्य नहीं होगा। इसके विपरीत हम देखेंगे कि लोग अचानक मरेंगे और मूर्तिवत हो जाएंगे तथा उनकी खालें पिघलने लगेंगी, पीने का पानी, भोजन और सब्ज़ियां दूषित हो जाएंगी और Radiation से प्रभावित होंगी। हम केवल इस बात की कल्पना ही कर सकते हैं कि ऐसा प्रदूषण किस प्रकार के रोगों का कारण बनेगा। वे स्थान जहां पर सीधे तौर पर आक्रमण न हो और जहां इस विकिरण (Radiation) के प्रभाव कुछ कम होंगे वहां पर भी रोगों का ख़तरा बहुत अधिक होगा और भावी नस्लों को बड़े ख़तरों से गुज़रना होगा।

अत: जैसा कि मैंने कहा है कि ऐसे युद्ध के विनाशकारी और भयानक प्रभाव केवल युद्ध या उसके बाद तक ही सीमित न होंगे अपितु भविष्य की अनेकों पीढ़ियों तक चलते चले जाएंगे। यह ऐसे युद्ध के वास्तविक परिणाम हैं। हालांकि इसके बावजूद आज स्वार्थी और मूर्ख लोग विद्यमान हैं जिन्हें अपने इन आविष्कारों पर बड़ा गर्व है और उन्होंने विश्व-विनाश के लिए जो कुछ विकसित किया है उसको वे उपहार के रूप में वर्णन करते हैं। वास्तविकता यह है कि रासायनिक शक्ति और टैक्नालॉजी का नाममात्र लाभप्रद पक्ष भी असावधानी या दुर्घटनाओं के कारण बहुत भयानक हो सकता है तथा महाविनाश की ओर ले जा सकता है। हम इससे पूर्व इस प्रकार की आकस्मिक आपदाओं को देख चुके हैं। इसी प्रकार की एक घटना 1986 ई. में चेरनोबिल (Chernobyl) अर्थात यूक्रेन में हुई और गत वर्ष ही जापान में भूकम्प और सुनामी के पश्चात् घटना हुई। यह भी बहुत भयानक थी इसने पूरे देश को भयभीत कर दिया। जब ऐसी घटनाएं प्रकट होती हैं तो फिर घटनाग्रस्त क्षेत्रों का पुर्ननिर्माण एवं पुनर्वास भी बहुत कठिन कार्य होता है। अपने एकमात्र और भयानक एवं दुखदायी अनुभवों के कारण जापानी अत्यधिक सतर्क हो गए हैं और नि:सन्देह उनके भय का अहसास यथोचित है।" (विश्व संकट तथा शांति पथ पृष्ठ 57-60)

अत: आजकल भी हम देख रहे हैं कि विश्व युद्ध का संकट फिर से दुनिया पर मंडरा रहा है कई देश फिर से आपस में लड़ रहे हैं। हम विश्व शक्तियों से यही आशा करते हैं कि वह जल्दी मध्यस्तता करते हुए इस संघर्ष को रोकने का प्रयास करे। अल्लाह तआला विश्व की बड़ी शक्तियों को शांति बहाल करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

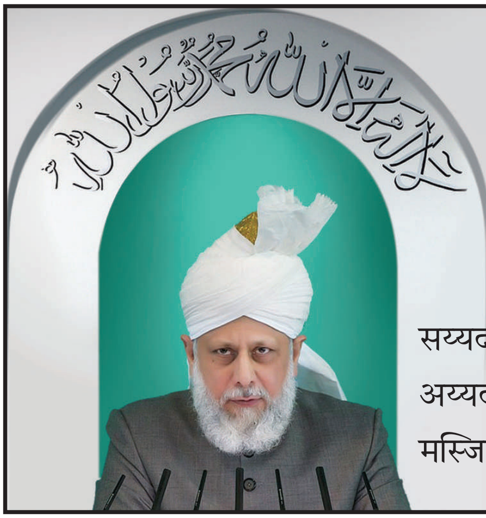

सारांश ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 2.5.2025 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

मौता नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी स.अ.व. का बयान

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि :

मौता नामक युद्ध का वर्णन हो रहा था इसके संदर्भ में और अधिक विस्तार इस प्रकार है कि जब आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. को विदा किया तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह ! मुझे किसी ऐसी चीज़ का आदेश दें जो मैं आपकी ओर से याद कर लूं। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- कल तुम ऐसे नगर में पहुंचोगे जहां सजदे कम होते हैं, अतएव तुम वहाँ अत्यधिक सजदे करना।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह बहुत बड़ी नसीहत है, आजकल हम जिन देशों में रह रहे हैं यहाँ लोग ख़ुदा को भुला चुके हैं। इस दौर में अहमदियों को अपनी इबादतों की ओर अत्यधिक ध्यान देना चाहिए। फिर आप रज़ी. के निवेदन पर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे फ़रमाया कि अल्लाह तआला को याद रखा करो, उसकी याद हर मामले में तुम्हारी सहायक है। जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. जाने लगे तो वापस आए और निवेदन पूर्वक कहा, ऐ अल्लाह के रसूल स.- अल्लाह वितर है और वितर को पसन्द करता है, तो आप स. ने फ़रमाया- सवाल करते ही करते जाओगे, ऐ इब्ने रवाहा? अब बस करो। जब तू पश्चाताप करना चाहे, और यदि तू ने दस आदमियों से बुराई की हो तो एक आदमी के साथ नेकी और भलाई करने के बाद रुक मत जाना। अर्थात- इतनी बुराईयों के बाद भी यदि अल्लाह तआला के लिए नेकी करोगे, अल्लाह तआला का भय दिल में होगा तो अल्लाह तआला क्षमा करने वाला है। अत: अल्लाह तआला भलाई करने वालों को क्षमा करता है उसकी दया अत्यन्त विशाल है। जहां तक हो सके इस प्रयास में रहो कि भलाई करनी है और बुराई से बचना है, यह नहीं कि हर बार दस बुराईयाँ करो और उसके बाद कहो कि एक नेकी कर ली। अतएव आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने जब यह फ़रमाया कि तू एक नेकी करने के बाद रुक मत आना, इस पर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. ने निवेदन किया- या रसूलुल्लाह स, मैं इसके बाद आपसे कोई सवाल नहीं करूंगा।
जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. को अलविदा किया तो वे रो पड़े, लोगों के पूछने पर आप रज़ी. ने अल्लाह की क़सम खा कर कहा कि मुझे ना संसार से प्रेम है और न तुमसे। मैंने रसूलुल्लाह स. को यह आयत पढ़ते हुए सुना है, जिसमें आग का वर्णन है तथा मैं नहीं जानता कि आग पर पेश होने के बाद मेरी क्या हालत होगी। इस पर लोगों ने उन्हें सांतवना दी और दुआ दी कि कुशलता पूर्वक आप हमारी ओर वापस आएं।
जुम: के दिन अभियान में शामिल समस्त लोग रवाना हो गए, किन्तु हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. ने यह सोचा कि मैं जुम: की नमाज़ रसूलुल्लाह स. के पीछे अदा करके उनसे जा मिलूंगा। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें देख कर पूछा कि तुझे किस चीज़ ने अपने साथियों के साथ जाने से रोके रखा? इस पर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. ने निवेदन पूर्वक कहा कि मैंने चाहा कि आप स. के साथ जुम: की नमाज़ अदा करके अपने साथियों से जा मिलूं। आप स. ने इस पर फ़रमाया कि ज़मीन में जो कुछ है यदि तुम वह सब ख़र्च कर डालो, तो जो लोग उस अभियान पर रवाना हो गए हैं तुम उनके फ़ज़ल को नहीं पा सकते।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. एक निपुण घुड़ सवार थे, वे भी इस अभियान में एक सामान्य सैनिक के रूप में सम्मिलित थे। इस अभियान की रवानगी के समय हज़रत खालिद रज़ी. को इस्लाम क़ुबूल किये हुए अभी तीन महीने हुए थे। मुसलमान अभी रवाना ही हुए थे कि दुश्मनों को मुसलमानों के रवाना होने की सूचना मिल गई और उन्होंने भी सेना गठित करना शुरू कर दी। मुसलमानों को ख़बर मिली कि उसमें सैनिकों की संख्या लगभग एक लाख है। उस अवसर पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. ने सहाबियों को प्रोत्साहित किया और उन्हें कहा कि दोनों, अर्थात शहादत और विजय में से दोनों ही तुम्हारे लिए लाभकारी हैं और इसी की तुम अभिलाषा करके निकले थे। यह सुन कर पूरी सेना ने कहा कि इब्ने रवाहा रज़ी. ने ठीक कहा। सहाबी रज़ी. आगे बढ़े तो मुशारफ़ नामक बस्ती के निकट उन्हें हर्कुल की सेना मिली जो रोम एवं अरब के लोगों के साथ थी। मुसलमानों ने उन्हें देखा तो उस बस्ती की ओर निकल गए जिसे मौता कहा जाता है। इस स्थान पर मुसलमानों ने युद्ध की तय्यारी की, हज़रत अबू हुरैरह रज़ी. उस युद्ध में शामिल हुए थे, वे कहते हैं कि जब दुश्मन हमारे निकट हुआ तो हमने इतनी अधिक संख्या, इतनी अच्छी तय्यारी, घोड़े एवं सोना इत्यादि पहले न देखा था, उसे देख कर मेरी तो आँखें चुँधिया गईं। इस पर मुझे हज़रत साबित रज़ी. ने कहा कि तुम यह विशाल सेना देख रहे हो, तुमने हमारे साथ बदर की लड़ाई नहीं देखी, हम वहाँ भी अधिकता के कारण ग़ालिब नहीं आए।

जब युद्ध शुरू हुआ तो घोर संग्राम हुआ और हज़रत ज़ैद रज़ी. ने आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे को लेकर जिहाद किया और दलेरी से शहादत को प्राप्त हुए। उसके बाद हज़रत जाफ़र रज़ी. ने इस्लाम का झंडा संभाला और जिहाद किया, यहाँ तक कि वे भी शहीद हो गए। एक रिवायत के अनुसार हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ी. ने अपने दाएं हाथ में झंडा थामा, जब वह कट गया तो बाएँ हाथ में झंडा पकड़ लिया, जब वह भी कट गया तो आप रज़ी. ने इस्लाम के झंडे को अपनी कोहनियों से पकड़ कर छाती से लगा लिया। शहादत के समय उनकी आयु 33 वर्ष थी। शहादत के बाद आप रज़ी. के शरीर पर लगभग साठ घाव देखे गए, उनमें से कोई

घाव भी आपकी पीठ पर नहीं था।

आप रज़ी. की शहादत के बाद इस्लामी सेना का झंडा हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. ने थाम लिया। आप रज़ी. को मांस का एक टुकड़ा पेश किया गया कि लड़ाई से पहले इससे कुछ ऊर्जा प्राप्त कर लें। अभी आप रज़ी. ने उसमें से कुछ भाग तोड़ा ही था कि एक ओर से तलवारें चलने की आवाजें आईं। आप रज़ी. ने अपने आपसे कहा कि तू अभी तक इस संसार में ही है, अर्थात युद्ध शुरू हो गया है और तू मांस खा रहा है। आप रज़ी ने वह मांस का टुकड़ा छोड़ा और तुरंत युद्ध में कूद पड़े और अत्यंत वीरता से लड़ते हुए शहीद हो गए और उनके हाथ से झंडा गिर गया। जब अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. शहीद हो गए तो मुसलमानों को घोर हानि हुई एवं कोई दो मुसलमान भी एकजुट होकर लड़ते नज़र ना आते थे। ऐसे में एक अन्सारी व्यक्ति ने इस्लामी झंडा उठा लिया, वह दौड़ता हुआ आया उसने लोगों के आगे झंडा गाड़ दिया। फिर उसने कहा कि लोगो! मेरी ओर आओ, लोग उसकी तरफ़ जमा हो गए। जब यह संख्या अधिक हो गई तो वे हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. के पास गए। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने कहा कि मैं इसे तुम से नहीं लूँगा, तुम इसके अधिक पात्र हो। इस पर उस अन्सारी ने कहा कि मैंने यह झंडा पकड़ा ही आपके लिए है। जब हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने झंडा थामा तो उन्होंने लोगों का बचाव किया, उन्हें समेट कर एकत्र किया और इस्लामी सेना को एक ओर हटा लिया। दुश्मन भी इनसे पीछे हट गया और वे लोगों को बचा कर वापस ले आए। इब्ने इस्हाक़ के अनुसार रोमियों से यह दूर हटना ही वास्तव में उनसे बचना था, क्यूंकि उस समय तीन हज़ार में से दो हज़ार मुसलमान सैनिक दुश्मन की सेना से मिल गए थे, अर्थात दोनों सेनाएं आपस में गुडमुड हो गई थीं, दुश्मन ने पूर्णत: मुसलमानों को घेर लिया था और वे इन पर पूरी तरह छा गए थे, ऐसे में मुसलमानों को बचाकर निकाल लेना ही विजय समान था। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि विजय के भी कई रूप होते हैं।

नबी करीम स. ने हज़रत ज़ैद रज़ी. जाफ़र रज़ी. और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. की शहादत के विषय में लोगों को बताया, इससे पहले कि उनकी ख़बर आती। आप स. ने फ़रमाया कि ज़ैद ने झंडा लिया और वे शहीद हो गए, फिर जाफ़र ने झंडा लिया और वे भी शहीद हो गए, फिर इब्ने रवाहा ने लिया और वे भी शहीद हो गए। आप स. की आँखें आंसू बहा रही थीं, फिर आप स. ने फ़रमाया कि इसके बाद झंडा अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ने ले लिया और अल्लाह ने उनके हाथ पर मुसलमानों को विजय प्रदान कर दी। उस दिन से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. को सैफ़ुल्लाह अर्थात अल्लाह की तलवार कहा जाने लगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जब हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने इस्लामी सेना का नेतृत्व संभाला तो आप रज़ी. ने सेना के आगे वाले भाग को पीछे एवं पीछे वाले भाग को आगे कर दिया, दाएं भाग को बाएँ ओर एवं बाएँ भाग को दाएं ओर कर दिया तथा ख़ूब ज़ोर से नारे लगाए जिससे दुश्मन ने यह समझा कि मुसलमानों के लिए सहायता आ गई है तथा वह पीछे हट गया और ख़ालिद रज़ी. मुसलमानों को बचा कर वापस ले आए।

झन्डे के मान सम्मान का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं- जब किसी क़ौम के लोगों के दिलों में उनके झंडे की मर्यादा स्थापित कर दी जाती है तो वह उन्हें इस बात के लिए तय्यार कर देती है कि यदि अपने झंडे की रक्षा के लिए उन्हें अपनी जानें क़ुर्बान करनी पड़ें तो नि:संकोच प्राणों की बलि दे दें, क्यूंकि उस समय छोटी सी लकड़ी और कपड़े का सवाल नहीं होता बल्कि क़ौम की मर्यादा का सवाल होता है जो उदाहरण

के रूप में झंडे की अवस्था में उनके सामने मौजूद होता है।

यह वर्णन आगे जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूरे अनवर ने दुनिया के सामान्य हालात के लिए दुआएं जारी रखने की ओर ध्यान दिलाया कि विशेष रूप से आजकल पाकिस्तान एवं हिन्दुस्तान के जो हालात हैं उनके लिए दुआ करें, अल्लाह तआला अत्याचार को समाप्त करे, पीड़ितों की रक्षा करे, शासकों को बुद्धि दे कि युद्धों की ओर बढ़ाने के बजाए सुलह सफ़ाई से समस्स्याओं को सुलझाएं। अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों का पालन करने वाले हों, और अल्लाह तआला अन्तर्राषट्रीय संगठनों को भी, जहां आजकल न्याय मिलना तो कठिन होता है, परन्तु अल्लाह तआला करे, इन संगठनों को भी तौफ़ीक़ दे और दोनों ओर के सहानुभूति करने वालों और दोस्तों को भी तौफ़ीक़ दे कि देशों की आपस की समस्स्याओं का समाधान करवा सकें, अल्लाह तआला दोनों पक्षों को बुद्धि दे। लड़ाई होती है तो दोनों ओर हानि होती है और फिर केवल राजनेता ही नहीं बल्कि जनता और पीड़ित लोग अकारण मारे जाते हैं, यही हम आजकल युद्धों में देख रहे हैं, यही हो रहा है हर जगह, अतएव दुनिया के सब पीड़ितों के लिए दुआ करें। प्रत्यक्षत: दुनिया विनाश के मुख पर खड़ी है, अल्लाह तआला ही इसे विनाश से बचाए और यह उसी समय हो सकता है जब ये ख़ुदा तआला की ओर झुकने वाले बन जाएं। अल्लाह तआला इन्हें तौफ़ीक़ दे और हमें भी दुआओं की तौफ़ीक़ दे।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने एक शहीद मुकर्रम मुहम्मद आसिफ साहब इब्ने मुकर्रम रफीक़ अहमद आफ़ भलेर ज़िला क़सूर का सदवर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई। शहीद मरहूम को अह्मदिय्यत के दुश्मनों ने 24 अप्रैल को फ़ाइरिंग करके शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना एलैही राजिऊन। शहादत के समय मरहूम की आयु 19 वर्ष थी। मरहूम नेक, आज्ञा पालन करने वाले, वीर, ज़ेली तन्ज़ीमों में भाग लेने वाले, शुद्ध आचरण वाले, ख़िलाफ़त से प्रेम करने वाले नौजवान थे। हुज़ूरे अनवर ने मरहूम की मग़फ़िरत और दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि पाकिस्तान में आतंक मचाने वालों और जमाअत का विरोध करने वालों के साहस बढ़ते जा रहे हैं, अल्लाह तआला जल्द इनकी पकड़ के सामान पैदा फ़रमाए।

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

ख़िलाफ़त ए अहमदिया: विश्व शांति के प्रयास में अग्रसर

लेखक : अनसार अली ख़ान, खादिम ए सिलसिला, महाराष्ट्र

आज के संघर्षपूर्ण और अशांत वातावरण में जहां हर कोई शांति की तलाश में है हम सभी के लिए अहमदिय्या मुस्लिम जमात के ख़लीफा का उपदेश एक जीवन रेखा है।

(27 मई ख़िलाफ़त दिवस पर विशेष)

ख़िलाफ़त ए अहमदिया एक आध्यात्मिक आशीर्वाद है, अंतर्राष्ट्रीय अहमदिया मुस्लिम समुदाय के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी,मसीह मौऊद व मेहदी मौऊद (उन पर शांति हो) के देहांत के अगले दिन अर्थात २७ मई १९०८ ई. को ख़िलाफत ए अहमदिया का यह आध्यात्मिक सिलसिला शुरू हुआ। संस्थापक अहमदिया मुस्लिम समुदाय हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी के ख़लीफ़ा (उतराधिकारी) ने समाज में प्रेम शांति तथा मानवता की स्थापना के उद्देश्य से जो अथक प्रयास किए हैं और कर रहे हैं वह वास्तव में सराहनीय हैं।

कभी दुआ के माध्यम से मख़लूक़ ए ख़ुदा की भलाई के लिए तो कभी अपने अविस्मरणीय आध्यात्मिक संबोधन के माध्यम से देश व दुनिया को उत्पीड़न से रोकने का प्रयास करते हैं , कभी वह अपने उपदेशों में मुसलमानों को सुधार और भविष्य की कार्ययोजना के बारे में बताते दिखते हैं तो कभी अपने पत्रों के माध्यम से शांति की राह में आने वाली बाधाओं को दूर करने की नि:स्वार्थ चेष्टा करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय अहमदिया मुस्लिम समुदाय के आध्यात्मिक ख़लीफ़ा परम पावन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने २२ अक्टूबर २००८ को यु.के. पार्लेमेंट को संबोधित किया। सन २०१२ में जर्मनी के सेना मुख्यालय में भाषण दिया। लंदन में आयोजित नौवें शांति सम्मेलन को आपने संबोधित किया। सन २०१२ में ही अमेरिका के कैपिटल हिल में ऐतिहासिक भाषण दिया। दिसंबर २०१२ में आपने युरोपीयन पार्लेमेंट को संबोधित किया, जिसमें ३० देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। इसके अतिरिक्त आपने ईसाईयों के धार्मिक मार्गदर्शक पोप साहेब को तथा अंतर्राष्ट्रीय राजनेताओं को विश्वशांति के संदर्भ में पत्र भी भेजे जिनमें (१) इज़राइल के तत्कालीन प्रधानमंत्री मि. बिन्जामिन नेतिनयाहु (२) ईरान के तत्कालीन राष्ट्रपति महमूद अहमदी निजाद (३) अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा (४) कैनेडा के प्रधानमंत्री मि.स्टेफन हॉर्पर (५) सऊदी अरब के बादशाह मि.अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ अल सऊद (६) चीन के राष्ट्रपति मी.जियाबाओ (७) ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री मी. डेविड कैमरुन (८) जर्मनी के चांस्लर मी. एंजिला मर्कर (९) फ्रेंच रिपब्लिक के प्रेसीडेंट (१०) ब्रिटेन की महरानी एलिजाबेथ (११) ईरान के धार्मिक नेता मि.आयतुल्लाह खेमिनी शामिल हैं।

२२ अक्टूबर २००८ को ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स को संबोधित करते हुए दुनिया भर में हो रहे युद्धों और उनके दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी देते हुए अहमदिया मुस्लिम समुदाय के वैश्विक ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कहा कि :

यदि हम गत कुछ सदियों का निष्पक्ष विश्लेषण करें तो हमें ज्ञात होगा कि तत्कालीन युद्ध वास्तव में

धार्मिक युद्ध न थे अपितु विश्व-राजनीति से संबंधित युद्ध थे। यहां तक कि वर्तमान लड़ाई-झगड़े तथा कौमों के मध्य शत्रुताओं से यह विदित होता है कि इन सब के परिप्रेक्ष्य में राजनैतिक, क्षेत्रीय एवं आर्थिक स्वार्थ होते हैं। मुझे यह आशंका है कि विश्व के देशों की राजनैतिक,आर्थिक गतिविधियां और उनके समस्त प्रेरक विश्व युद्ध की ओर ले जा सकते हैं। केवल विश्व के ग़रीब देश ही नहीं अपितु अमीर देश भी इससे प्रभावित हो रहे हैं। अत: यह विश्व शक्तियों का कर्त्तव्य है कि वे बैठकर विचार करें तथा विनाश के कगार पर खड़ी मानवता को बचाएं।

इसी प्रकार एक अन्य अवसर पर विश्व शांति की बहाली के लिए ब्रिटिश सरकार का मार्गदर्शन करते हुए उन्होंने तत्कालीन ब्रिटिश प्रधान मंत्री आदरणीय श्री डेविड केमरून को लिखे अपने एक पत्र में लिखा कि:

मैं आपको पुन: स्मरण कराता हूं कि ब्रिटेन भी उन देशों में से है जो विकसित और विकासशील देशों पर अपना प्रभाव डाल सकते हैं और डालते हैं। यदि आप चाहें तो आप न्याय और इन्साफ़ की मांगों को पूरा करते हुए विश्व का पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं। अत: ब्रिटेन तथा अन्य शक्तिशाली देशों को विश्व शान्ति की स्थापना के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। अल्लाह तआला आपको और विश्व के अन्य नेताओं को यह सन्देश समझने का सामर्थ्य प्रदान करे।

अहमदिया मुस्लिम समुदाय के वैश्विक ख़लीफ़ा ने अपने पत्रों के माध्यम से वैश्विक संदर्भ में बने कुछ बड़े गुटों को बार-बार संबोधित किया और उन्हें बार-बार यह विश्वास दिलाया कि दुनिया जिस तीव्रता से विनाश की ओर बढ़ रही है विश्व नेताओं को इस पहलू पर बहुत गंभीरता से विचार करना होगा। अत: इज़राइल के प्रधान मंत्री को २६ फ़रवरी २०१२ में लिखे एक पत्र में आपने कहा कि:

मेरा आप से यह निवेदन है कि विश्व को एक विश्व युद्ध में झोंकने की बजाए विश्व को यथासंभव विनाश से बचाने का प्रयत्न करें। शक्ति द्वारा विवादों का समाधान करने के स्थान पर वार्तालाप के द्वारा उनका समाधान करने का प्रयास करना चाहिए ताकि हम अपनी भावी पीढ़ियों को बतौर उपहार एक उज्ज्वल भविष्य दें, न कि हम उन्हें विकलांगताओं जैसे दोषों का उपहार दें।

फिर इस्लामी गणतंत्र ईरान के तत्कालीन राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद को ७ मार्च २०१२ को भेजे एक पत्र में कहा कि:

आजकल विश्व में बहुत अशान्ति और बेचैनी है। बहुत से देशों में छोटे स्तर के युद्ध आरंभ हो चुके हैं जबकि अन्य स्थानों में महा-शक्तियां शान्ति स्थापित करने के बहाने हस्तक्षेप कर रही हैं। प्रत्येक देश किसी अन्य देश की सहायता या विरोध में प्रयासरत है परन्तु न्याय की मांगे पूर्ण नहीं की जा रहीं। मैं खेद के साथ कहता हूं कि यदि अब हम विश्व की वर्तमान परिस्थितियों को ध्यानपूर्वक देखें तो हमें ज्ञात होगा कि एक और विश्व-युद्ध की नींव पहले ही रखी जा चुकी है।

आज के संघर्षपूर्ण और अशांत वातावरण में जहां हर कोई शांति की तलाश में है। उन सभी के लिए ये उपदेश मरूभूमि में फंसे उस प्राणी के लिए एक जीवन रेखा है जो पानी की एक बूंद की आस में जीवित है। काश दुनिया इस वास्तविकता को समझ पाती।

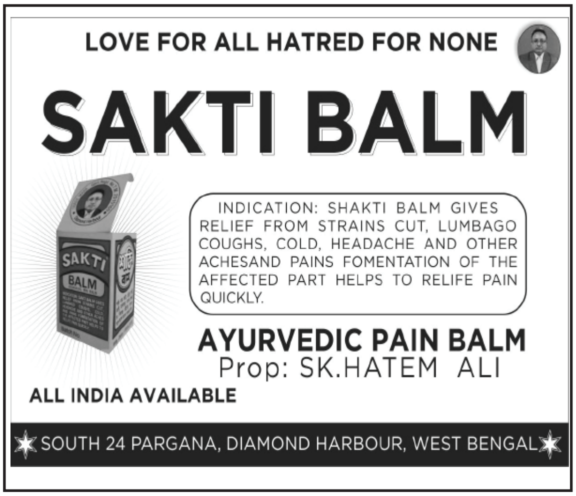
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
SAKTI BALM
INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.
AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI
ALL INDIA AVAILABLE
SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
RSB Traders & whole seller
Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items
Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18
Mob: 9647960851 9082768330

INDIA MOVES ON EXIDE
M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)
Cell :9440996396,9866531100

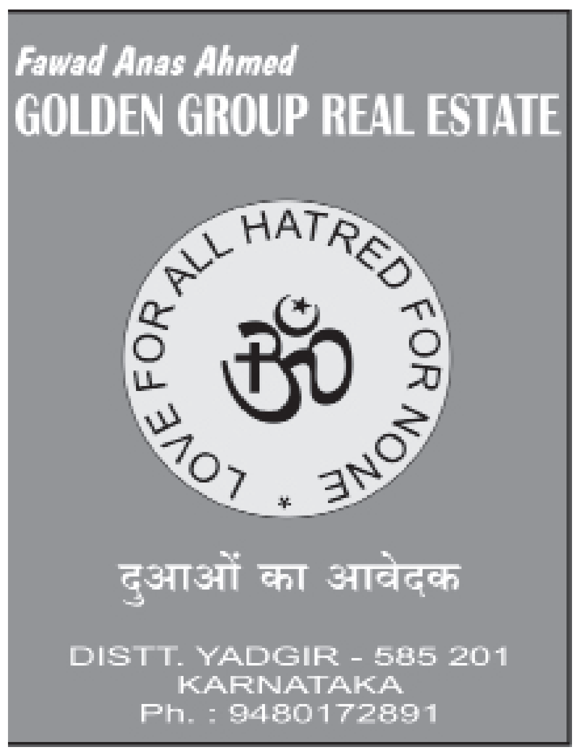
Fawad Anas Ahmed
GOLDEN GROUP REAL ESTATE
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
दुआओं का आवेदक
DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS
YUBA
QUALITY FOOTWEAR
E-mail:yuba.metro@yahoo.com
{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}
H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH :2328-1016

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की मुबारक तहरीकें

पुस्तक : ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा उसके लाभ

अल्लाह तआला जब अपने बन्दों में से किसी को ख़लीफ़ा चुनता है तो उसकी जहां दुआओं को क़बूल फ़रमाता है वहां उसके कामों में बरकतें रख देता है। जो व्यक्ति भी समय के ख़लीफ़ा का आज्ञापालन करता है वह सफल हो जाता है। और स्वयं ख़ुदा तआला भी युग के ज़रूरतों के अनुसार समय के ख़लीफ़ा से विभिन्न कार्य लेता है। इसी लिए समय का ख़लीफ़ा जमाअत के लिए भलाई और सफलता के लिए विभिन्न अवसरों पर विभिन्न तहरीकें करते हैं। ताकि जमाअत के ईमान में असाधारण उन्नति हो। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह समय के ख़लीफ़ा की तहरीक के बारे में एक स्थान पर वर्णन फ़रमाते हैं कि:

वास्तव में तो समय के ख़लीफ़ा की तहरीक बहुत अधिक बरकतों वाली और ख़ुदाई तहरीक होती है। आप फ़रमाते हैं कि :

"अल्लाह तआला जब भी कोई तहरीक जमाअत अहमदिया के किसी ख़लीफ़ा के दिल में डालता है। इसके बारे में आपको पूरी तरह सन्तुष्ट होना चाहिए कि ज़रूर कोई ख़ुदाई इशारे ऐसे हैं जो भविष्य की अच्छी बातों का पता दे रहे हैं और वह तहरीक जो ज़ाहिर में मामूली सी आवाज़ से उठती हुई नज़र आती है एक महान इमारत में बदल जाती है। जिस तहरीक में आप इसलिए हिस्सा लेंगे कि अल्लाह तआला के स्थापित किए गए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा की तहरीक है इस में महान बरकतें पड़ेंगी जो आपके विचारों से बड़ी होंगी। (मासिक पत्रिका ख़ालिद, रब्वा जून 1986 ई पृष्ठ 21)

हुज़ूर अनवर के भाषणों के आलोक में ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की बहुत सारी तहरीकों में से कुछ बाबरकत तहरीकें यहाँ वर्णन की जा रही हैं। ताकि जमाअत के लोग سمعنا و اطعنا(सुनना और आज्ञापालन करना) के क़ुरआन के आदेश के अनुसार अनुकरण करते हुए अपने प्यारे आक़ा की तहरीकों का अनुकरण करें।

1. जमाअत अहमदिया यू.के और M.T.A में काम करने वालों के लिए दुआ की तहरीक

जमाअत यू.के को और एम.टी.ए का शुक्रिया अदा करें जो लोग यहां नहीं आ सके उन्होंने जिस विस्तार से एम. टी. ए के द्वारा आपके दिलों की सन्तुष्टि के सामान पाए इस पर दुनिया में करोड़ों अहमदी एम. टी. ए के काम करने वालों के उपकृत हैं कि उन्होंने न आने वाले मजबूरों को भी प्यासा नहीं रहने दिया। मेरी सूचना के अनुसार तो मुझे पता चला है कि कुछ काम करने वाले निरन्तर 48 घंटे तक डयूटी देते रहे और फिर थोड़ा सा आराम करते थे। ये सब अवश्य ही हमारी दुआओं के अधिकारी हैं। समस्त जमाअत को इन समस्त काम करने वालों के लिए जिन्होंने प्रबन्धकीय दृष्टि से सेवा की या एम.टी.ए में सेवा कर रहे हैं, दुआ का विशेष निवेदन करता हूँ अल्लाह तआला इन सब को बेहतरीन बदला दे और भविष्य में भी इसी वफ़ा और इख़लास के साथ इसी तरह क़ुर्बानियां देते हुए काम करते चले जाएं। आमीन। (ख़ुत्बाते मसरूर भाग 1 पृष्ठ 37,38)

2. दुआ की तहरीक

अप्रैल 1903 ई. में फिर यह इल्हाम है:

رَبِّ اِنِّیْ مَظْلُوْمٌ فَانْتَصِرْ فَسَحِّقْهُمْ تَسْحِيْقًا

अर्थात- हे मेरे रब मैं पीड़ित हूँ। मेरी मदद कर और उन्हें अच्छी तरह पीस डाल। (तज़्किरा) यह दुआ आजकल प्रत्येक अहमदी को करनी चाहिए। इस पर ध्यान दें।

(ख़ुत्बा जुम्अः 25 जुलाई 2003 ई.)

3. ताहिर फाऊंडेशन की स्थापना की घोषणा

विभिन्न लोगों ने ध्यान दिलाया है स्वयं भी ख़्याल आया कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहेमहुल्लाह की जारी तहरीकें हैं और इस्लाम के विजय के लिए आपके विभिन्न मन्सूबे थे। आपके ख़ुत्बे हैं, तक़रीरे हैं, मज्लिस-ए-इर्फ़ान हैं। उनके संकलन और प्रकाशन का काम है। तो ये काफ़ी व्यापक काम है जिसके लिए अलग संस्था के बनाने की ज़रूरत है। तो काफ़ी सोच के बाद फ़ैसला किया है कि एक संस्था ताहिर फाऊंडेशन के नाम से स्थापित की जाए और इसके लिए इंशा अल्लाह एक मज्लिस होगी, बोर्ड आफ़ डायरेक्टर होगा, जो कि बीस मेम्बरों पर आधारित होगा और इसकी एक सब कमेटी लंदन में भी होगी। क्योंकि दुनिया में विभिन्न स्थानों में फैले हुए, विभिन्न भाषाओं के काम हैं और जहां तक फ़ंडज़ का सम्बन्ध है मुझे उम्मीद है कि इंशा अल्लाह तआला तीनों मर्कज़ी अंजुमनें मिल कर ये फ़ंडज़ उपलब्ध करेंगी परन्तु कुछ लोगों की भी इच्छा होगी तो इस में कोई पाबंदी नहीं है जो कोई अपनी ख़ुशी से, अपनी इच्छा से इस तहरीक में हिस्सा लेना चाहें, उन मन्सूबों को व्यावहारिक रूप पहनाने के लिए, उनको आज्ञा होगी, दे सकते हैं इस में कुछ। तो दुआ करें जो कमेटी बनेगी उसको अल्लाह तआला काम करने की तौफ़ीक़ भी दे और प्रत्येक लिहाज़ से वह काम जो हुज़ूर रहेमहुलल्लाह की तहरीके हैं जो दुनिया के सामने प्रस्तुत करने की ज़रूरत है उनको सम्पूर्ण करने की तौफ़ीक़ मिले।

(अल्फ़ज़ल इंटरनेश्नल 19 सितम्बर 2003 ई)

4. नुसरत जहां स्कीम के अधीन अहमदी डाक्टरों को वक़्फ़ ज़िन्दगी की तहरीक

"जलसा (जलसा बर्तानिया 2003 ई) पर मैंने डाक्टरों को ध्यान दिलाया था कि हमारे अफ़्रीक़ा के अस्पतालों के लिए डाक्टर स्थायी या कुछ समय के लिए वक़्फ़ करें। अब तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हालात बहुत बेहतर हैं। वे दिक्कतें और वे मुश्किलें भी नहीं रहीं जो शुरू के वाक़फ़ीन को सम्मुख आईं और अधिकतर स्थान तो बहुत बेहतर हालात हैं और समस्त सुविधाएं उपलब्ध हैं। और यदि कुछ थोड़ी बहुत मुश्किलें हों भी तो इस अहद बैअत को सामने रखें कि केवल अल्लाह के लिए अपनी ख़ुदा तआला द्वारा दी गई ताक़तों से मानव जाति को लाभ पहुंचाऊंगा। आगे आएं और युग के मसीह से किए हुए इस वादा को पूरा करें और उनकी दुआओं के वारिस बनें। इसी तरह रब्वा में फ़ज़्ले उम्र अस्पताल के लिए भी डाक्टरों की ज़रूरत है वहां भी डाक्टर साहिबों को अपने आप को पेश करना चाहिए।

फिर पाकिस्तान में भी और दूसरे देशों में भी बच्चों की शिक्षा और मरीज़ों के इलाज के लिए स्थायी

जमाअत के लोगों के प्रबन्ध के अधीन आर्थिक सहायता करते हैं और पाकिस्तान और हिन्दुस्तान जैसे देशों में जहां ग़रीबी बहुत अधिक है इस उद्देश्य के लिए आर्थिक सहायता करने वाले इस सेवा के कारण मरीज़ों की दुआएं ले रहे हैं। तो इस नेक काम को भी जमाअत के लोगों को जारी रखना चाहिए और पहले से बढ़कर जारी रखना चाहिए और पहले से बढ़ कर करना चाहिए क्योंकि दुखों में वृद्धि भी तेज़ी से हो रही है।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 12 दिसम्बर 2003 ई)

5. मानवता की सेवा की तहरीक

"जमाअत की सतह पर यह इन्सानियत की सेवा यथा सामर्थ्य हो रही है। जमाअत के निष्ठावान लोगों को मानव सेवा के उद्देश्य से अल्लाह तआला तौफ़ीक़ देता है, वे बड़ी-बड़ी रक़में भी देते हैं जिनसे मानवता की सेवा की जाती है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अफ्रीक़ा में भी और रब्वा और क़ादियान में भी वाक़फ़ीन डाक्टर और टीचर सेवा कर रहे हैं। परन्तु मैं प्रत्येक अहमदी डाक्टर, प्रत्येक अहमदी टीचर और प्रत्येक अहमदी वकील और प्रत्येक वह अहमदी जो अपने पेशे के लिहाज़ से किसी भी रंग में मानवता की सेवा कर सकता है, ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों के काम आ सकता है, उनसे यह कहता हूँ कि वे ज़रूर ग़रीबों और ज़रूरतमंदों के काम आने की कोशिश करें। तो अल्लाह तआला आप के मालों तथा नफ्सों में पहले से बढ़कर बरकत प्रदान करेगा। इंशा अल्लाह यदि आप सब इस नीयत से यह सेवा कर रहे हों कि हमने युग के इमाम के साथ एक बैअत का अहद किया है जिसको पूरा करना हम पर फ़र्ज़ है तो फिर देखें कि इंशाअल्लाह, अल्लाह तआला के फ़ज़लों और बरकतों की किस क़दर बारिश होती है जिसको आप सँभाल भी नहीं सकेंगे।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 7 नवम्बर 2003 ई.)

6. इंटरनेट का ग़लत प्रयोग एक सामाजिक बुराई बन कर सामने आ रहा है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने इंटरनैट का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि:-

"यह भी पर्दा करने के अन्तर्गत आता है। कुछ लड़के लड़की बन कर बातचीत कर रहे होते हैं। जब जमाअत का परिचय हो जाए तो लड़की ख़ुश हो जाती है कि चलो तब्लीग़ हो रही है। यदि आपकी नीयत साफ़ है तो दूसरी ओर जो लड़का-लड़की बन कर बैठा हुआ है आप को क्या पता कि इसकी क्या नीयत है। फिर कई बार तस्वीरों के तबादले शुरू हो जाते हैं कुछ स्थानों पर रिश्ते भी हुए हैं और भयानक परिणाम सामने आए हैं। इंटरनैट एक सामाजिक बुराई बन कर सामने आ रहा है यदि तब्लीग़ ही करनी है तो लड़कियां लड़कियों ही को तब्लीग़ करें, लड़कों को न करें यह काम लड़कों के लिए ही रहने दें माता पिता इस बात पर नज़र रखें कि खुले तौर पर इंटरनेट के सम्पर्क नहीं होने चाहिएं जो समझबूझ की आयु को पहुंच चुके वे स्वयं भी होश करें।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 28 नवम्बर 2003 ई)

7. बुरी रस्में छोड़ने की तहरीक

फ़रमाया- "आज भी औरतों को इन बातों का ख़्याल रखना चाहिए। केवल अपने क्षेत्र की या देश की रस्मों के पीछे न चल पड़ें बल्कि जहां भी ऐसी रस्में देखें जिनसे हल्की सी भी शिर्क की शंका होती हो उनसे बचने की कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह करे समस्त अहमदी औरतें इसी भावना के साथ अपनी और अपनी

नस्लों की तर्बीयत करने वाली हों। हमारे देशों में, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान इत्यादि में मुसलमानों में भी यह रिवाज है कि लड़कियों को पूरी जायदाद नहीं देते। पूरी क्या, देते ही नहीं। खासतौर पर देहाती लोगों में, ज़मींदारों में। इसका एक नमूना है, चौधरी नस्रुल्लाह ख़ान साहिब का। चौधरी साहिब लिखते हैं कि हमारी बहन साहिबा मरहूमा को उस युग के रिवाज के अनुसार पिता जी ने उनकी शादी के अवसर पर बहुत सारा दहेज दिया और फिर आपने वसीयत भी कर दी कि आपका विरसा शरीयत मुहम्मदी के अनुसार बटेगा भी, लड़कों में भी और लड़कियों में भी। अत: उसके अनुसार उनके देहान्त के बाद उनकी बेटी को भी शरीयत के अनुसार हिस्सा दिया गया। (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 5 दिसम्बर 2003 ई.)

8. सिगरेट छोड़ने की तहरीक

फ़रमाया "आज-कल यही बुराई है हुक़्क़ा वाली, जो सिगरेट की अवस्था में प्रचलित है। तो यह जो सिगरेट पीने वाले हैं उनको कोशिश करनी चाहिए कि सिगरेट छोड़ें। क्योंकि छोटी उम्र में ख़ासतौर पर सिगरेट की बीमारी जो है वह आगे सिगरेट की कई किस्में निकल आई हुई हैं जिन में नशे वाली चीज़ें मिला कर पी जाती है। तो वह नौजवानों की ज़िन्दगी बर्बाद करने की ओर एक क़दम है जो दज्जाल का फैलाया हुआ है और बद-क़िस्मती से मुसलमान देश भी इस में सम्मिलित हैं। बहरहाल हमारे नौजवानों को चाहिए कि कोशिश करें कि सिगरेट पीना छोड़ दें।"(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 5 दिसम्बर 2003 ई.)

9. लाटरी हराम है

फ़रमाया "यही आज-कल यहां यूरोप में रिवाज है, पश्चिम में रिवाज है लाटरी का कि जो लोग लाटरी डालते हैं और उनकी रकमें निकलती हैं वह हरगिज़ उनके लिए जायज़ नहीं बल्कि हराम है। इसी तरह जिस तरह जूए की रक़म हराम है पहले तो लेनी नहीं चाहिए और यदि ग़लती से निकल भी आई है तो फिर अपने पर प्रयोग नहीं हो सकती।" (ख़ुत्बाते मसरूर भाग 1 पृष्ठ 381)

10. जादू-टोने, टोटके से बचने की तहरीक

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि: "पीर बनो, पीर परस्त न बनो।" यहां यह भी बता दूं कि कुछ रिपोर्टें ऐसी आती हैं, सूचनाएं मिलती रहती हैं, पाकिस्तान में भी और दूसरे स्थानों में भी, कहीं-कहीं रब्वा में भी कि कुछ अहमदियों ने अपने दुआ करने वाले बुज़ुर्ग बनाए हुए हैं और वे बुज़ुर्ग भी मेरे निकट तथाकथित हैं जो पैसे लेकर या वैसे तावीज़ इत्यादि देते हैं या दुआ करते हैं कि 20 दिन की दवाई ले जाओ, 20 दिन का पानी ले जाओ या तावीज़ ले जाओ। ये सब व्यर्थ काम और लग़ू बातें हैं। मेरे निकट तो वे अहमदी नहीं हैं जो इस तरह तावीज़ इत्यादि करते हैं। ऐसे लोगों से दुआ करवाने वाला भी यह समझता है कि मैं जो मर्ज़ी करता रहूं, लोगों के हक़ मारता रहूं, मैंने अपने बुज़ुर्ग से दुआ करवा ली है इसलिए बख़्शा गया, या मेरे काम हो जाएँगे। अल्लाह तआला तो कहता है कि मोमिन कहलाना है तो मेरी इबादत करो, और तुम कहते हो कि पीर साहिब की दुआएं हमारे लिए काफ़ी हैं। ये सब शैतानी विचार हैं इन से बचें। औरतों में खासतौर पर यह बीमारी अधिक होती है, जहां-जहां भी हैं हमारे एशियन (Asian) देशों में इस तरह का

अधिक होता है या जहां-जहां भी Asians इकट्ठे हुए होते हैं वहां भी कई बार हो जाता है। इसलिए ज़ैली तंज़ीमें इस बात की समीक्षा करें और ऐसी जो बिदअतें फैलाने वाले हैं इसकी रोकथाम करने की कोशिश करें। यदि कुछ एक भी ऐसी सोच वाले लोग हैं तो फिर अपने माहौल पर प्रभाव डालते रहेंगे, न केवल ज़ैली तंज़ीमें बल्कि जमाअत का निज़ाम भी जायज़ा ले और जैसा कि मैंने कहा कि कुछ एक भी यदि लोग होंगे तो अपने प्रभाव डालते रहेंगे और शैतान तो हमले की ताक में रहता है। अल्लाह तआला की बात मानने वाले बनने की बजाय इस तरह कुछ शिर्क में पड़ने वाले हो जाएँगे।

अल्लाह तआला सब को इससे सुरक्षित रखे। परन्तु मैं फिर कहता हूँ कि यह बीमारी चाहे कुछ एक में ही हो, जमाअत के अंदर बर्दाश्त नहीं की जा सकती। अल्लाह तआला तो यह दुआ सिखाता है कि अपने-अपने क्षेत्र में प्रत्येक यह दुआ करे कि मुझे मुत्तक़ियों का इमाम बना। समय का ख़लीफ़ा भी यह दुआ करता है कि मुझे मुत्तक़ियों का इमाम बना और यह पीर की पूजा करने वाले लोग कहते हैं कि हम जो मर्ज़ी काम करें हमारे पीर साहिब की दुआओं से हम बख़्शे जाएँगे। इन्ना लिल्लाह। यह तो नऊज़ बिल्लाह ईसाइयों के कफ़्फ़ारा वाला मामला ही धीरे-धीरे बन जाएगा। वही दृष्टिकोण पैदा होता जाएगा। अत: इस ओर चाहे यह छोटे माहौल में ही हो, बहुत ध्यान की ज़रूरत है। अभी से इसको दबाना होगा और प्रत्येक अहमदी यह वादा करे कि इस रमज़ान में अपने अंदर इंशा अल्लाह तआला इन्क़िलाबी तब्दीलियां पैदा करनी हैं। प्रत्येक अहमदी यह कोशिश करे और प्रत्येक अहमदी स्वयं उन दुआओं और अल्लाह तआला के सानिध्य के मज़े चखे बजाय इस के की दूसरों के पीछे जाए। (ख़ुत्बाते मसरूर भाग 2 पृष्ठ 764)

11. निज़ाम जमाअत की पाबंदी की तहरीक

"पंद्रह वर्ष की उम्र के बाद जैसा कि मैंने कहा कि लज्ना या ख़ुद्दाम में जाकर ये लोग अपने ओहदेदार अपने में से चुनते हैं और फिर मर्कज़ी हिदायतों की रोशनी में विभिन्न मामले और तर्बीयती मामले स्वयं कर रहे होते हैं और उन पर अनुकरण भी करते हैं तो बचपन से ही ऐसी तर्बीयत प्राप्त करने के कारण, ऐसे प्रोग्रामों में सम्मिलित होने के कारण उनको ट्रेनिंग हो जाती है और फिर यही बच्चे जब बड़े होते हैं और जमाअत के निज़ाम में पूरी तरह समोए जाते हैं तो जमाअत के कामों में भी अधिक लाभदायक और फायदा वाला वजूद प्रमाणित होते हैं और इस निज़ाम का एक हिस्सा बनते हैं। तो बहरहाल इन्हीं ज़ैली निज़ामों का हिस्सा बनते हुए प्रत्येक बच्चा, जवान, औरत, मर्द, जब जमाअत के निज़ाम का हिस्सा बन जाते हैं तो मानो जमाअत का निज़ाम पहले ही, मुक़द्दम है... चूँकि आरम्भ से ही निज़ाम का तसव्वुर प्यार मुहब्बत और भाईचारा और मिल-जुल कर काम करने की रूह के साथ वह बच्चा परवान चढ़ रहा होता है और फिर समय के ख़लीफ़ा के साथ प्रत्येक अवसर पर ज़ाती प्यार तथा मुहब्बत का सम्बन्ध इस ट्रेनिंग के कारण हो रहा होता है और हो जाता है इसलिए जमाअत का प्रत्येक व्यक्ति जब जमाअत के कामों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहा हो और अपने ओहदेदारों का आज्ञापालन ख़ुशी के साथ करता है तो इसलिए करता है कि बचपन से निज़ाम के बारे में पड़ने वाली आवाज़ और समय के ख़लीफ़ा से ज़ाती सम्बन्ध और प्यार के कारण विवश है और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से निज़ाम जमाअत चूँकि मज़बूत नींवों पर स्थापित हो चुका है और समय के ख़लीफ़ा की

सीधा उस पर नज़र होती है इसलिए नए सम्मिलित होने वाले, नौ मुबाईन भी इन अहमदियों के इलावा भी जो जनमजात अहमदी हों, बड़ी शीघ्रता से प्रणाली में समोए जाते हैं। (ख़ुत्बात मसरूर भाग 1 पृष्ठ 515)

12. दुआ की तहरीक

यह दुआ विशेष रूप से अन्य दुआओं के साथ ज़रूर किया करें और जैसा कि मैंने कहा था प्रत्येक नई ख़िलाफ़त के बाद इसका महत्व बढ़ जाता है और वह दुआ यह है। हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा को ख़्वाब के द्वारा अल्लाह ने सिखाई, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़्वाब में आए थे और कहा था कि यह दुआ जमाअत पढ़े:

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ

(आले इम्रान : 9)

हे हमारे रब! हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे बाद इसके कि तू हमें हिदायत दे चुका हो और हमें अपनी ओर से रहमत प्रदान कर। अवश्य तू ही है जो बहुत प्रदान करने वाला है। यह दुआ बहुत किया करें अल्लाह तआला हमें प्रत्येक बुराई से सुरक्षित रखे। आमीन (ख़ुत्बा जुम्अ: 5 दिसम्बर 2003 ई)

13. सच्चाई के उच्च स्तर स्थापित करने की नसीहत

अल्लाह तआला हम में से प्रत्येक को सच के उच्चतर स्तर स्थापित करने और झूठ से घृणा कर के नफ़रत करने वाला बनाए। प्रत्येक अहमदी जिधर भी जाए इस पर कभी इस इशारे के साथ उंगली न उठे के यह झूठा है बल्कि प्रत्येक उंगली प्रत्येक अहमदी पर इन शब्दों पर उठे कि यदि सच्चाई का कोई साक्षात रूप देखना है तो यह अहमदी जा रहा है। यदि किसी क़ौम के अंदर कोई सच्चाई देखनी है, इस दुनिया में मौजूदा हालात में किसी ने सच्चाई देखनी है तो इन अहमदियों में देखो। तो प्रत्येक अहमदी चाहे वह अमरीका में रहने वाला हो या यूरोप में हो, प्रत्येक देखने वाले अहमदी के बारे में यही कहे कि सच्चाई उनका स्पष्ट पक्ष है और पहचान है। अल्लाह तआला हम सब को इस गुण पर स्थापित रहने की और इस पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। (ख़ुत्बाते मसरूर भाग 1 पृष्ठ 564)

14. शादी विवाह के अवसर पर सादगी और अल्लाह की रज़ा को सम्मुख रखने की नसीहत

शादियों पर लड़कों को खाना खिलाने के लिए बुलाया जाता है और कहा जाता है कि यह छोटी उम्र के हैं परन्तु यह लड़के युवावस्था को पहुंच चुके होते हैं और उनसे पर्दे का आदेश है यदि वे छोटी उम्र के भी हैं तो उनके माहौल के कारण उनके दिमाग़ गंदे हो चुके होते हैं, माताओं को इस ओर ध्यान देना चाहिए। अहमदी परिवेश में अहमदी की टीम बनाई जाए इस तरह मानव सेवा का काम हो जाएगा और ख़र्चों में भी कमी आ जाएगी। लजना के फंक्शनज़ में लजना इमाइल्लाह की लड़कियां काम करें। चेहरा छिपाने का बहरहाल आदेश है। यदि पर्दे की स्वयं व्याख्या करनी शुरू कर दें और प्रत्येक अपनी पसन्द के पर्दे की व्याख्या करने लग जाए तो फिर पर्दे की पवित्रता कभी स्थापित नहीं रह सकती। माँ बाप दोनों को बच्चियों के पर्दे की ओर ध्यान देना चाहिए और यह दोनों की ज़िम्मेदारी है। ग़लत किस्म की ग़ैर अहमदी नौकरानियों को रखने की सावधानी करनी चाहिए और उन को बिना तहक़ीक़ के नहीं रखना चाहिए। शरीयत ने डांस

करने से मना किया है और शरीफ़ों का नाच से कोई सम्बन्ध नहीं। शादियों पर लड़कियां जो शरीफ़ाना नग़मे गाती हैं इस में कोई हर्ज नहीं फिर उस अवसर पर दुआ की नज़्में भी पढ़ी जाती हैं और नए शादीशुदा जोड़े को दुआओं से विदा किया जाता है। अल्लाह तआला का हमें यही आदेश है कि ख़ुशियां मनाओ तो सादगी से मनाओ और अल्लाह की रज़ा को हमेशा सम्मुख रखो। हमारी सफलता का भरोसा ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने और उसकी ओर झुकने में ही है।"

15 जमाअत की इमारतों को साफ़ रखने का बाक़ायदा प्रबन्ध हो

इसके लिए ख़ुद्दामुल अहमदिया और लजना इमाइल्लाह वक़ारे अमल करें।

"यदि जलसे नहीं होते तो यह अर्थ नहीं कि रब्वा साफ़ न हो बल्कि जिस तरह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने फ़रमाया था कि ग़रीब दुल्हन की तरह सजा के रखो। यह सजावट अब स्थायी रहनी चाहिए। शूरा के दिनों में रब्वा की कुछ सड़कों को सजाया गया था। तज़ईन रब्वा वालों ने इसकी तस्वीरें भेजी हैं, बहुत सुन्दर सजाया गया परन्तु रब्वा का अब प्रत्येक चौक इस तरह सजना चाहिए ताकि अनुभव हो कि वहां रब्वा में सफाई और सुन्दरता की ओर ध्यान दिया गया है और प्रत्येक घर के सामने सफाई का एक उच्च स्तर नज़र आना चाहिए और यह काम केवल तज़ईन कमेटी नहीं कर सकती बल्कि प्रत्येक शहरी को इस ओर ध्यान देना होगा।

इसी तरह क़ादियान में भी अहमदी घरों के अन्दर और बाहर सफाई का विशेष ख़्याल रखें। एक स्पष्ट अन्तर नज़र आना चाहिए। गुज़रने वाले को पता चले कि अब वह अहमदी मुहल्ले या अहमदी घर के सामने से गुज़र रहा है।

सफाई के अन्तर्गत एक बहुत अधिक ज़रूरी बात जो जमाअत के तौर पर ज़रूरी है वह है जमाअत की इमारतों के माहौल को साफ़ रखना। इसका पहले मैं वर्णन कर चुका हूँ। इसका नियमित प्रबन्ध होना चाहिए और ख़ुद्दामुल अहमदिया को वक़ारे अमल भी करना चाहिए और यदि इमारत के अंदर का हिस्सा है तो लज्ना को भी इस में हिस्सा लेना चाहिए और इस में सबसे प्रमुख इमारतें मस्जिदें हैं मस्जिदों के माहौल को भी फूलों, क्यारियों और हरियाली से सुन्दर रखना चाहिए, सुन्दर बनाना चाहिए और इसके साथ ही मस्जिद के अंदर की सफाई का भी विशेष प्रबन्ध होना चाहिए।

(ख़ुत्बा जुम्अः 23 अप्रैल 2004 ई

16. शादी ब्याह में फुज़ूल ख़र्ची की मनाही

आज-कल के शादी ब्याहों पर फुज़ूल ख़र्ची इतनी होती है कि जिसकी सीमा नहीं है, पाकिस्तान हिन्दुस्तान इत्यादि में भी, और यूरोप और पश्चिम के दूसरे देशों में भी। अब तो कुछ लोगों ने कहना शुरू कर दिया है कि इस ओर लोगों को ध्यान दिलाना चाहिए। एक तो दहेज की दौड़ लगी हुई है, ज़ेवर बनाने की दौड़ लगी हुई है, फिर दावतों में ग़ैर ज़रूरी ख़र्चे और नाम तथा दिखावे की दौड़ लगी हुई है और जो बेचारा न कर सके, यदि स्वयं अपने संसाधनों से कर सकते हैं तो ठीक है परन्तु जो न कर सके इस पर फिर बातें बनाते हैं कि बुलाया था, वहां यह था वह था और फिर कई कई दिन विभिन्न नामों से रस्में जारी

हो चुकी हैं और दावतें की जाती हैं। दावत तो केवल एक दावत वलीमा है, जो इस्लाम की यह सही शिक्षा में हमें नज़र आती है। इसके इलावा तो जिस की तौफ़ीक़ नहीं है दिखावे के लिए तो दावतें करनी ही नहीं चाहिएं और कभी अपने ऊपर बोझ नहीं डालना चाहिए हाँ जब मेहमान आते हैं हल्की फुल्की मेहमान नवाज़ी फ़र्ज़ है वे कर दी जाए और फिर जिसके पास संसाधन हैं वे यदि दावत कर लेता है तो अपने ही संसाधनों से ख़र्च करता है। इसकी देखा देखी अपने पर बोझ डाल कर जिसके कम संसाधन वाले हैं जिसकी तौफ़ीक़ नहीं है इसको क़र्ज़ लेकर या फिर सहायता की दरख़्वास्त देकर ऐसा नहीं करना चाहिए और कम संसाधन वालों को यथा सम्भव कोशिश यही करनी चाहिए कि जितना कम से कम हो सके ख़र्च करें क्योंकि उन को तो इस बात पर ख़ुश होना चाहिए वे अल्लाह के नबी की सुन्नत का अनुकरण कर रहे हैं, बजाए इसके कि हीन भावना में पीड़ित हों।

17. ख़िलाफ़त के साथ सम्पर्क

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जमाअत के नाम अपने पहले पैग़ाम में फ़रमाया :-

"यदि क़ुदरत-ए-सानिया न हो तो इस्लाम कभी उन्नति नहीं कर सकता। अतः इस क़ुदरत के साथ सम्पूर्ण आज्ञापालन और मुहब्बत एवं वफ़ा और आस्था का सम्बन्ध रखें और ख़िलाफ़त के आज्ञापालन की भावना को स्थायी बनाएँ और इसके साथ मुहब्बत की भावना को इतना बढ़ाएं कि इस मुहब्बत के मुक़ाबला में दूसरे रिश्ते तुच्छ नज़र आएं। इमाम से जुड़ाव में ही सब बरकतें हैं और वही आपके लिए प्रत्येक प्रकार के फ़ित्नों और परीक्षाओं के मुक़ाबला के लिए एक ढाल है।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 23 मई 2003 ई)

फिर हुज़ूर ने फ़रमाया :-

"ख़लीफ़ाओं की ओर से विभिन्न समयों में विभिन्न तहरीकें भी होती रहती हैं। रूहानी उन्नति के लिए भी जैसा कि मस्जिदों को आबाद करने के बारे में है, नमाज़ों के क़ियाम के बारे में है, औलाद की तर्बीयत के बारे में है, अपने अन्दर आचरण बुलन्द करने के बारे में, बुलन्द हौसला पैदा करने के बारे में, दावत इलल्लाह के बारे में विभिन्न माली तहरीकें हैं। तो यही बातें हैं जिनका आज्ञापालन करना ज़रूरी है। दूसरे शब्दों में आज्ञापालन दर मअरूफ के अन्तर्गत यही बातें आती हैं तो नबी ने या किसी ख़लीफ़ा ने तुम्हारे से अल्लाह के आदेशों के ख़िलाफ़ और अक़्ल के ख़िलाफ़ तो काम नहीं करवाने। यह तो नहीं कहना कि तुम आग में कूद जाओ और समुद्र में छलांग लगा दो ... तो स्पष्ट हो कि नबी या समय के ख़लीफ़ा कभी भी मज़ाक़ में भी ये बात नहीं कर सकता। (ख़ुत्बाते मसरूर भाग 1 पृष्ठ 343)

यह केवल कुछ तहरीकें हैं जिनका यहाँ वर्णन किया गया है वरना इसके अलावा भी बहुत सी अन्य तहरीकें हैं जो हुज़ूर अनवर ने समय समय पर की हैं। अल्लाह ताला हमें इन तमाम तहरीकों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए। आमीन

* * *

LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

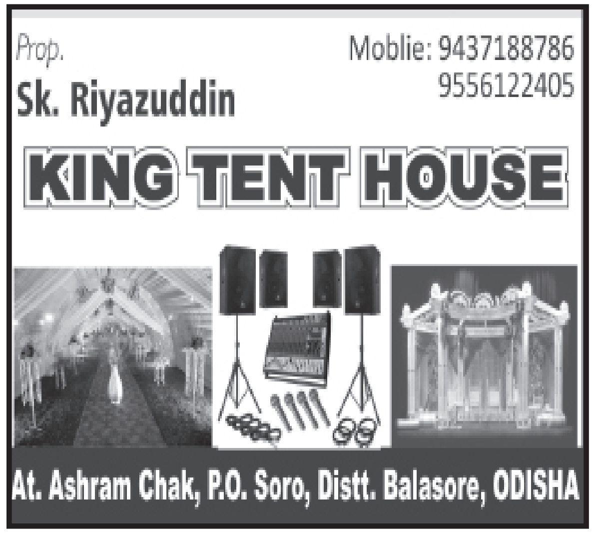
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT
Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

ख़िलाफ़त और हमारी ज़िम्मेदारियाँ (हमारा दायित्व)

सम्माननीय पाठको ! अल्लाह तआला का हम पर यह महान उपकार है कि उस ने हमें सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने की तौफ़ीक़ प्रदान की और आप को ख़ुदा तआला की ओर से भेजा गया मसीह और महदी के मानने की तौफ़ीक़ प्रदान की और आपके बाद स्थापित क़ुदरत-ए-सानिया अर्थात ख़िलाफ़त की बैअत की तौफ़ीक़ प्रदान की। ये इनाम सब इनामों से बढ़कर है और ये उपकार सब उपकारों से बढ़कर। दुनिया की समस्त दौलतें इस उपकार तथा इनाम के मुक़ाबला पर तुच्छ हैं। ख़ुदा तआला ने अपने विशेष फ़ज़ल से आज सारी धरती पर केवल हमें और हाँ केवल हमें एक महान अमानत का अमीन बनाया है और महान इनाम से नवाज़ा है परन्तु याद रहे यह अमानत हमसे कुछ मांग करती है, यह सौभाग्य अपने साथ महान ज़िम्मेदारियाँ लेकर आया है। प्रत्येक अहमदी को हर समय इन ज़िम्मेदारियों से अवगत रहना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि अपने ईमान और कर्मों से इस ख़ुदाई नेअमत को अधिक से अधिक स्थायित्व और दृढ़ता प्रदान करने की कोशिश करें।

ख़ुदा का शुक्र

सम्माननीय पाठको ! ख़िलाफ़त की स्थापना और हमारा उसकी बैअत करके ख़िलाफ़त के क़दमों में आना इस में हमारी अपनी कोई व्यक्तिगत विशेषता नहीं है बल्कि अल्लाह तआला का हम पर महान उपकार है कि उस ने हमें ख़िलाफ़त के अधीन पनपने की तौफ़ीक़ प्रदान की। इसलिए हमें चाहिए कि हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें और उसकी प्रशंसा के तराने गाएँ कि उसने यह महान नेअमत हमें प्रदान की।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

"हमारे लिए आवश्यक है कि हम उसके शुक्रगुज़ार बंदे बनकर अपनी ज़िन्दगियों के दिन गुज़ारें और जमाअत के अंदर एकता और इत्तिफ़ाक़ को हमेशा स्थापित रखें और इस हक़ीक़त को नज़र अंदाज न करें कि सब सम्मान और सारी वलायत ख़िलाफ़त राशिदा के पांव के नीचे है।"

(तामीर बैयतुल्लाह के 23 महान उद्देश्य पृष्ठ 116)

आज्ञापालन और वफादारी

क़ुदरत-ए-सानिया की दृढ़ता और मज़बूती का दूसरा माध्यम यह है कि समय के इमाम की सम्पूर्ण आज्ञापालन और वफ़ादारी का बेहतरीन आदर्श दिखाया जाए।

पवित्र क़ुरआन और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों में बार-बार कई स्थानों पर इमाम की आज्ञापालन की नसीहत फ़रमाई गई है अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में फ़रमाया है कि:

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا

(सूरत अल-अहज़ाब आयत 72)

अर्थात जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करेगा वह नि:सन्देह बहुत बड़ी सफलता प्राप्त

करेगा।

हमारे प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं कि :

"क़ुदरत-ए-सानिया ख़ुदा की ओर से एक बड़ा इनाम है जिस का मक़सद क़ौम को इकट्ठा करना और मतभेदों से बचाना है। यह जो लड़ी है जिसमें जमाअत मोतियों की तरह पिरोई हुई है यदि मोती बिखरे हों तो न तो सुरक्षित होते हैं और न ही सुन्दर दिखते हैं। एक लड़ी में पिरोए हुए हों तो सुन्दर और सुरक्षित होते हैं। यदि क़ुदरत-ए-सानिया न हो तो इस्लाम कभी उन्नति नहीं कर सकता, अत: इस क़ुदरत के साथ पूर्ण निष्ठा और मुहब्बत और वफ़ा और अक़ीदत का सम्बन्ध रखें और ख़िलाफ़त की आज्ञापालन की भावना की घोषणा करने वाला बनें।" (दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वा 30 मई 2003 ई)

अपने एक पैग़ाम में आप ने जमाअत के लोगों को फ़रमाया :

"यह ख़िलाफ़त की नेअमत है जो जमाअत की जान है। इसलिए यदि आप ज़िन्दगी चाहते हैं तो ख़िलाफ़त के साथ इख़लास और वफ़ा के साथ चिमट जाएं। पूरी तरह से जुड़ जाएं कि आपकी प्रत्येक उन्नति का राज़ ख़िलाफ़त से जुड़ने में ही छुपा है। ऐसे बन जाएं कि समय के ख़लीफ़ा की रज़ा आपकी रज़ा हो जाए। समय के ख़लीफ़ा के क़दमों पर आपका क़दम और समय के ख़लीफ़ा की प्रसन्नता आपका लक्ष्य हो जाए।" (मासिक ख़ालिद रब्वा सय्यदना ताहिर नम्बर मार्च अप्रैल 2004 ई.)

समय के ख़लीफ़ा से व्यक्तिगत सम्बन्ध

नबी का उत्तराधिकारी होने के हवाला से ख़लीफ़ा का स्थान बहुत बुलन्द होता है। अल्लाह तआला जब किसी व्यक्ति को ख़िलाफ़त के ताज से सरफ़राज़ फ़रमाता है तो वही इन्सान जो लोगों की नज़रों में कल तक एक साधारण इन्सान था अल्लाह तआला के नूर से प्रकाशित होकर एक नूरानी वजूद बन जाता है। वह नूर का स्रोत ही नहीं होता बल्कि उसके वजूद से दुनिया में ख़ुदा का नूर फैलने लगता है और वह उस रूहानियत को फैलाने का केन्द्र बन जाता है। इस बुलन्द स्थान पर फ़ायज़ होने के बाद ख़ुदा तआला से उसका ऐसा क़रीबी सम्बन्ध पैदा हो जाता है कि ख़ुदा तआला उसको दुआ की क़बूलियत का चमत्कार प्रदान करता है ख़ुदा तआला स्वयं उसका उस्ताद (गुरू) बन कर उसे रूहानी ज्ञान प्रदान फ़रमाता है। इस महान तब्दीली के बारे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने वर्णन फ़रमाया है:

"ख़लीफ़ा स्वयं अल्लाह तआला बनाता है और उसके चयन में कोई त्रुटि नहीं। वह अपने एक कमज़ोर बंदे को चुनता है जिसे लोग बहुत तुच्छ समझते हैं। फिर अल्लाह तआला उसको चुन कर उस पर अपनी महानता और प्रताप का एक जलवा प्रकट है और जो कुछ उसका था उस में से वह कुछ भी शेष नहीं रहने देता और ख़ुदा तआला की महानता और प्रताप के सामने सम्पूर्ण तौर पर फ़ना और बे-नफ़सी का चोला वह पहन लेता है और उसका वजूद दुनिया से ग़ायब हो जाता है और ख़ुदा की क़ुदरतों में वह छुप जाता है तब अल्लाह तआला उसे उठा कर अपनी गोद में बिठा लेता है।" (दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वा, 17 मार्च 1967 ई)

क़बूलियत दुआ का जो स्तर समय के ख़लीफ़ा को प्रदान किया जाता है उसकी हिकमत हज़रत मुस्लेह

मौऊद रज़ि अल्लाह ने इन शब्दों में वर्णन फ़रमाई :

"अल्लाह तआला जिस किसी को मन्सब-ए-ख़िलाफ़त पर सरफ़राज़ करता है तो उसकी दुआओं की क़बूलियत को बढ़ा देता है क्योंकि यदि उसकी दुआएं क़बूल न हों तो फिर उसके अपने चयन का अपमान होता है।

समय के ख़लीफ़ा को ख़ुदा तआला की ओर से मिलने वाले नूर, ज्ञान तथा आध्यात्म और क़बूलियत के स्तर, दुआ से बरकत प्राप्त करने के लिए मोमिनों की एक अहम ज़िम्मेदारी यह है कि वह समय के ख़लीफ़ा के साथ मुहब्बत तथा अक़ीदत और फ़िदा होने का एक व्यक्तिगत और क़रीबी सम्बन्ध रखें।

यह वह नेअमत है जो अल्लाह तआला ने इस युग में हमें इतने अच्छे अंदाज़ में और इतनी सहूलत से उपलब्ध की है जैसी इससे पहले कभी न थी। समय के ख़लीफ़ा से व्यक्तिगत और फ़ैमिली मुलाक़ात की अवस्था आज प्रत्येक अहमदी को उपलब्ध है। चाहे वह दुनिया के किसी देश में रहता हो, समय के ख़लीफ़ा के क़दमों में हाज़िर होकर वह यह सौभाग्य प्राप्त कर सकता है। फिर हुज़ूर अनवर के विश्वव्यापी दौरों के समय इन देशों के अहमदियों को यह सौभाग्य अपने देश में रहते हुए मिल जाती है। पत्रों,फ़ैक्सों और ई मेलों के द्वारा हुज़ूर अनवर से सीधा सम्पर्क का पूरा निज़ाम मौजूद है। इससे भरपूर लाभ उठाना और समय के ख़लीफ़ा से निरन्तर सम्पर्क रखना हमारी अहम ज़िम्मेदारी है।

समय के ख़लीफ़ा के उपदेशों को सुनना

पवित्र क़ुरआन में मोमिनों की जमाअत का गुण समिअना वा अतअना के शब्दों में वर्णन किया गया है। वे हमेशा नेकी की बातों को ध्यान से सुनते, समझते और याद रखते हैं और फिर इन बातों पर दिल तथा जान से अनुकरण भी करते हैं। आज्ञापालन की पहली सीढ़ी सुनना है इसीलिए इस गुण को पहले रखा गया है। जो व्यक्ति सुनेगा नहीं वह अनुकरण कैसे कर सकेगा? आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों में भी निज़ाम से जुड़ने और निज़ाम के अगुवा की सम्पूर्ण आज्ञापालन का वर्णन बहुत अधिक मिलता है। एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

أُوْصِيْكُمْ بِتَقْوَى اللهِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ

(तिरमिज़ी किताबुल ईमान, बाब अख़रज बिस्सुन्नत)

अनुवाद: मैं तुम को अल्लाह के तक़्वा की और सुनने की और आज्ञापालन करने की वसीयत करता हूँ।

इस हदीस से यह रहस्य की बात भी मिलती है कि तक़्वा को प्राप्त करने के दो बड़े माध्यम कान खोल कर हिदायतों को सुनना और उन पर अनुकरण करना है एक और हदीस में आता है।

اِسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا (बुख़ारी किताबुल अहकाम, बाबुल इताअत)

मानो एक सच्चे मुसलमान की शान यह है कि वह नसीहत को सुनने और उसका आज्ञापालन करने का मूर्त रूप होता है। आज्ञापालन के अन्तर्गत यह बात भी याद रखने के योग्य है कि पवित्र क़ुरआन की जिस सूरत में आयत इस्तिख़लाफ़ आई हुई है उसी सूरत अन्नूर में अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया है कि:

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا (नूर- 64)

अनुवाद: तुम्हारे बीच रसूल का तुम्हें बुलाना इस तरह न बनाओ जैसे तुम एक दूसरे को बुलाते हो।

इस आयत की तफ़सीर करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया है:

"तुम्हारा फ़र्ज़ है कि जब भी तुम्हारे कानों में ख़ुदा तआला के रसूल की आवाज़ आए। तुम शीघ्र उस पर लब्बैक कहो और उसके अनुकरण के लिए दौड़ पड़ो कि इसी में तुम्हारी उन्नति का राज़ छुपा है बल्कि यदि इन्सान उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहा हो तब भी उसका फ़र्ज़ होता है कि वह नमाज़ तोड़ कर ख़ुदा तआला के रसूल की आवाज़ का जवाब दे ... यही आदेश अपने दर्जा के अनुसार ख़लीफ़ा-ए-रसूलुल्लाह पर भी वारिद होता है और उसकी आवाज़ पर जमा हो जाना भी ज़रूरी होता है।"

(तफ़सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 408,409)

फिर आप ने यह भी फ़रमाया-

"जो जमाअतें अनुशासित होती हैं उन पर कुछ ज़िम्मेदारियाँ होती हैं जिनके बिना उनके काम कभी भी सही तौर पर नहीं चल सकते ... उन शर्तो और ज़िम्मेदारियों में से एक प्रमुख शर्त और ज़िम्मेदारी यह है कि जब वह एक इमाम के हाथ पर बैअत कर चुके तो फिर उन्हें इमाम के मुँह की ओर देखते रहना चाहिए कि वह क्या कहता है और उसके क़दम उठाने के बाद अपना क़दम उठाना चाहिए... इमाम का स्थान तो यह है कि वह आदेश दे और जिस को आदेश दिया गया उसका स्थान यह है कि वह पाबंदी करे।"

(दैनिक अल्फ़ज़ल क़ादियान 5 जून 1937 ई)

अत: प्रत्येक अहमदी की एक बुनीयादी ज़िम्मेदारी यह है कि वह समय के ख़लीफ़ा के उपदेशों को ध्यान से सुने और उसकी ओर से आने वाली प्रत्येक आवाज़ पर कान धरे। समय के ख़लीफ़ा को अल्लाह तआला का ग़ैरमामूली समर्थन और राहनुमाई प्राप्त होती है। वह ख़ुदा तआला की आज्ञा और हिदायत से बोलता है। ज्ञान तथा इर्फ़ान के चश्मे उसकी मुबारक ज़बान पर जारी होते हैं। वह उन बातों की ओर मोमिनों की जमाअत को बुलाता है जो समय की ज़रूरत और प्रत्येक सुनने वाले के लिए बहुत अधिक लाभदायक और बरकतों वाली होती हैं अत: हुज़ूर अनवर के अध्यात्मज्ञान से भरे वाले जुम्अ: के ख़ुत्बों को नियमित और पूरे ध्यान से सुनना, बच्चों को सुनाना और समझाना प्रत्येक अहमदी की एक बुनियादी ज़िम्मेदारी है। हुज़ूर अनवर के खिताबों और पैग़ामों को सुनना भी बहुत अनिवार्य है। इन बातों को सुनने से ही हमें मालूम हो सकता है कि प्यारे हुज़ूर हम से क्या कर रहे हैं और हम से क्या आशाएं रखते हैं। अत: जो अहमदी इन ख़ुत्बों और खिताबों को बाक़ायदा ध्यानपूर्वक नहीं सुनेगा वह हुज़ूर के उपदेशों के अनुकरण के सौभाग्य से भी वंचित रह जाएगा।

एक और अवसर पर आपने फ़रमाया-

"याद रखो ... ईमान नाम है इस बात का कि ख़ुदा तआला के खड़े िकए गए प्रतिनिधि के मुंह से जो भी आवाज़ बुलन्द हो उसका आज्ञापालन की जाए ... हज़ार बार कोई व्यक्ति कहे कि मैं मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाता हूँ। हज़ार बार कोई कहे कि मैं अहमदियत पर ईमान रखता हूँ। ख़ुदा के हुज़ूर

उसके इन दावों की कोई क़ीमत नहीं होगी जब तक वह उस व्यक्ति के हाथ में अपना हाथ नहीं देता जिसके द्वारा ख़ुदा इस युग में इस्लाम को ज़िन्दा करना चाहता है। जब तक जमाअत का प्रत्येक व्यक्ति पागलों की तरह उसका आज्ञापालन नहीं करता और जब तक उसके आज्ञापालन में अपने जीवन का प्रत्येक लम्हा नहीं व्यतीत करता, उस समय तक वह किसी किस्म के सम्मान और बड़ाई का हक़दार नहीं हो सकता। (दैनिक अल्फ़ज़ल क़ादियान 15 नवम्बर 1946 ई. पृष्ठ 6)

हर तहरीक पर शौक से लब्बैक कहना

आज्ञापालन की मांग यह है कि समय के ख़लीफ़ा की ओर से आने वाली प्रत्येक आवाज़ पर शौक से लब्बैक कहा जाए। किसी इरशाद को भूलना या उसकी ओर ध्यान न देना एक अहमदी की शान नहीं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया :

बैअत वह है जिसमें पूर्ण आज्ञापालन किया जाए और ख़लीफ़ा के किसी एक आदेश से भी मुंह न मोड़ा जाए। (मिासक अल-फ़ुर्क़ान रब्वा ख़िलाफ़त नम्बर मई जून 1967 पृष्ठ 28)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया -

ख़लीफ़ा उस्ताद है और जमाअत क़ा प्रत्येक व्यक्ति शागिर्द। जो लफ़्ज़ भी ख़लीफ़ा के मुँह से निकले उसका पालन किए बिना नहीं छोड़ना।

(दैनिक अल्फ़ज़ल क़ादियान 2 मार्च 1946 ई.)

फिर आप फ़रमाते हैं:

तुम सब इमाम के इशारे पर चलो और उसकी हिदायात से ज़र्रा भर भी इधर उधर न हो। जब वह आदेश दे बढ़ो और जब वह आदेश दे ठहर जाओ और जिधर बढ़ने का वह आदेश दे उधर बढ़ो और जिधर से हटने का वह आदेश दे उधर से हट जाओ।

(अनवार उल-उलूम जलद 14, पृष्ठ 515-516)

फिर आपने एक और अवसर पर फ़रमाया :

"ख़िलाफ़त के तो अर्थ ही यह हैं कि जिस समय ख़लीफ़ा के मुँह से कोई लफ़्ज़ निकले उस समय सब स्कीमों, सब परामर्शों और सब उपायों को फेंक दिया जाए और समझ लिया जाए कि अब वही स्कीम वही तजवीज़ और वही उपाय मुफ़ीद है जिस का समय के ख़लीफ़ा की ओर से आदेश मिला है। जब तक यह विचार जमाअत में न पैदा हो उस समय तक सब ख़ुत्बात व्यर्थ, समस्त स्कीमें झूठी और समस्त कोशिशें व्यर्थ हैं।" (ख़ुत्बा जुमअ: 24 जनवरी 1936 ईं)

औलाद को नसीहत

निज़ाम ख़िलाफ़त के सम्बन्ध में मोमिनों की एक और ज़िम्मेदारी यह भी है कि वे न केवल स्वयं ख़िलाफ़त के निज़ाम की सुरक्षा और उसकी मज़बूती के लिए सेवा के प्रत्येक मैदान में किोशश करते रहें बल्कि अपनी औलाद में भी यही रूह और भावना पैदा करें। आज के बच्चे और नौजवान कल को

जमाअत के अलमबरदार और प्रतिनिधि बनने वाले हैं। उनके दिलों में ख़िलाफ़त के निज़ाम की मुहब्बत पैदा करके उनको इस बरकतों वाले निज़ाम से जोड़ना माता पिता की एक महान ज़िम्मेदारी है। ज़िन्दा और उन्नति करने वाली क़ौमों की यही निशानी है कि उनकी अगली नस्लें उन उद्देश्यों को बुलन्द रखने वाली हों जिन के लिए उनके पूर्वजों ने अपने समय में अपनी जानें कुर्बान कीं। इसी महत्व के सम्मुख हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने जमाअत से एक वादा लिया था जो आज भी याद रखने के योग्य है। वादे के शब्द यह थे।

हम ख़िलाफ़त की प्रणाली की सुरक्षा और इसकी दृढ़ता के लिए आख़िर दम तक कोशिश करते रहेंगे और अपनी औलाद और उन की औलाद को हमेशा ख़िलाफ़त से जोड़ने और उसकी बरकतों से लाभान्वित होने की नसीहत करते रहेंगे ताकि क़यामत तक ख़िलाफ़त अहमदिया सुरक्षित चली जाए और क़यामत तक सिलसिला अहमदिया के द्वारा इस्लाम का प्रचार प्रसार होता रहे और मुहम्मद रसूलुल्लाह का झंडा दुनिया के समस्त झंडों से ऊंचा लहराने लगे। हे ख़ुदा तू हमें इस वादे को पूरा करने की तौफ़ीक़ प्रदान कर। अल्ला हुम्मा आमीन। अल्ला हुम्मा आमीन। अल्ल हुम्मा आमीन। (दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वा,16 फरवरी 1960 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने भी अपने एक पैग़ाम में जमाअत को इस बारे में याद दिलाया है। फ़रमाया :

इस्लाम, अहमदियत की मज़बूती और प्रकाशन और निज़ाम ख़िलाफ़त के लिए आख़िर दम तक किोशश करनी है और इसके लिए बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी प्रस्तुत करने के लिए हमेशा तैयार रहना है। और अपनी औलाद को हमेशा ख़िलाफ़त अहमदिया से जोड़ने की नसीहत करते रहना है। और उनके दिलों में समय के ख़लीफ़ा से मुहब्बत पैदा करनी है। यह इतना बड़ा और महान लक्ष्य है कि इस अहद पर पूरा उतरना और इसके तक़ाज़ों को निभाना एक इरादा और दीवानगी चाहता है।

(त्रैमासिक अन्नासिर जर्मनी जून से सितम्बर 2003 ई पृष्ठ 1)

सम्माननीय पाठको ! यदि आज हम अपनी ज़िम्मेदारियों को उत्तम रूप में अदा करें और ख़िलाफ़त की मज़बूती के लिए आज्ञापालन का व्यावहारिक प्रमाण देते रहेंगे जैसा कि हमारे पूर्वज देते रहे। तो ख़ुदा की क़सम ख़िलाफ़त अहमदिया सारी दुनिया में इस्लाम को फैलाकर सच्ची तौहीद को स्थापित कर देगी। और हमारे ईमान तथा कर्मों की सच्चाई के कारण ख़िलाफ़त का साया देर तक हमारे सिरों पर स्थापित रहेगा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह यह ख़ुशख़बरी दे चुके हैं कि:

भविष्य में इंशाअल्लाह ख़िलाफ़त अहमदिया को कभी कोई ख़तरा नहीं होगा। जमाअत अपनी बलूग़त की आयु को पहुंच चुकी है। कोई बुरा चाहने वाला अब (ख़िलाफ़त अहमदिया) का बाल भी बीका नहीं कर सकता। और जमाअत इसी शान से उन्नति करेगी। ख़ुदा का यह वादा पूरा होगा कि कम से कम एक हज़ार साल तक जमाअत में ख़िलाफ़त स्थापित रहेगी। (ख़ुत्बा जुमुअः जून 1982 ई)

एक और अवसर पर आप फ़रमाते हैं कि :

भविष्य में भी विभिन्न ज़रूरतें होंगी इससे कोई इन्कार नहीं है क्योंकि जमाअत की तक़दीर में यह लिखा

हुआ है कि मुश्किल रास्तों से गुज़रे और तरक्कियों के बाद नई तरक्कियों की मंज़िलों में दाख़िल हो। यह कठिनाइयां ही हैं जो जमाअत की ज़िन्दगी का सामान उपलब्ध करती हैं। इस विरोध के बाद जो वसीअ पैमाने पर अगले विरोध मुझे नज़र आ रहे हैं वे एक दो हुकूमतों की घटना नहीं इस में बड़ी बड़ी हुकूमतें मिलकर जमाअत को मिटाने की साज़िशें करेंगी और जितनी बड़ी साज़िशें होंगी उतनी ही बड़ी नाकामी उनके मुक़द्दर में भी लिख दी जाएगी।

मुझ से पहले ख़लीफ़ाओं ने आने वाले ख़लीफ़ाओं को हौसला दिया था और कहा था कि तुम ख़ुदा पर भरोसा रखना और किसी विरोध से ख़ौफ़ नहीं खाना। मैं आने वाले ख़लीफ़ाओं को ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि तुम भी हौसले रखना और मेरी तरह हिम्मत तथा सब्र से काम लेना और दुनिया की किसी ताक़त से ख़ौफ़ नहीं खाना। वह ख़ुदा जो छोटी मुख़ालफ़तों को मिटाने वाला ख़ुदा है वह भविष्य में आने वाली बड़ी- बड़ी मुख़ालफ़तों को भी चकना-चूर करके रख देगा और दुनिया से उनके निशान मिटा देगा। जमाअत अहमदिया ने बहरहाल विजय के बाद एक और विजय की मंज़िल में दाख़िल होना है। दुनिया की कोई ताक़त इस तक़दीर को किसी हाल में बदल नहीं सकती।

(ख़िताब 29 जुलाई 1984 ई पहला यूरोपियन इज्तिमा मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यू के)

सम्माननीय पाठको! हमारी कितनी ख़ुश क़िस्मती और सौभाग्य है कि आज दुनिया के पर्दे पर केवल अहमदियत ही है जिसे अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त की बरकतों वाला निज़ाम प्रदान किया है। विभिन्न प्रकार के नेतृत्व के अधीन चलती व्यवस्थाएं तो नज़र आती हैं परन्तु कोई ऐसा नेतृत्व करने वाला नहीं जिसको ख़ुदा ने निर्धारित किया हो। कोई ऐसा मार्गदर्शक नहीं जिसके सिर पर ख़ुदा की छत्रछाया हो, कोई ऐसा नहीं जिसकी ख़ुदाई मदद और सहायता की गई हो, कोई नहीं जिसके क़दमों में ख़ुदाई आज्ञा से विजय बिछती चली जाती हों !

आइए हम दिल और जान से यह वादा करें कि हमारा और हमारी नस्लों का जीना और मरना ख़िलाफ़त के लिए होगा और हम उसके लिए हर क़ुर्बानी प्रस्तुत करने के लिए प्रति क्षण तैयार रहेंगे। वास्तव में ख़िलाफ़त का महत्व और सारी बरकतें इस में हैं कि हम क़ुदरत-ए-सानिया की मांगों को पूरा करने वाले और ज़िम्मेदारियों को समझने और अदा करने वाले हों।

अल्लाह तआला हमारे दिल तथा जान से प्यारे आक़ा और ख़लीफ़ा सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ को सेहत तथा सलामती वाली लंबी आयु प्रदान करे और हमें अपने महबूब आक़ा के मार्गदर्शन में सही प्रकार से आज्ञापालन का सामर्थ्य प्रदान करे। हे ख़ुदा ! तू हमें इस बात का सामर्थ्य प्रदान कर ताकि हम अपने वादे को निभाते हुए अपने जन्म के उद्देश्य को उत्तम ढंग से पूरा कर सकें और तेरी प्रसन्नता प्राप्त करने वाले हों।

आमीन, सुम्मा आमीन

* * *

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER
Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक
WASIMA STONE CRUSHER
Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

Mob. : 09986670102
09036915406
Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

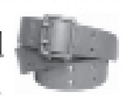

Al-Fazal Garments
Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in
Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

ज़रूरी ऐलान
130वां जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 130वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 26,27,28 दिसंबर 2025 ई. (शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की मन्ज़ूरी दी है। अहबाब जमाअत अभी से इस जलसा सालाना में सम्मिलित होने की नीयत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सबको, ख़ुदा की खातिर आयोजित किए जा रहे इस जलसे से फायदा उठाने की तौफीक अता फरमाए। इस जलसे की कामियाबी और हर प्रकार से बाबरकत होने के लिए इसी प्रकार नेक रूहों की हिदायत का ज़रिया बनने के लिए दुआएं करते रहें। अल्लाह तआला आपको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। (नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया, क़ादियान)

☆ ☆ ☆